अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन (कलकत्ता) की स्वागत समिति के पदाधिकारी

बाँये से दाहिने बैठे हुए—

श्री रखाराम गंभीर (भोजन मन्त्री)
श्री दीपकदत्त चौधरी बार-एट-ला (उप-प्रधान)
श्री कृष्णलाल पोद्दार (उप-प्रधान)
श्री मिहिरचन्द धीमान् (स्वागताध्यक्ष)
श्री हंसराज हांडा (स्वागत मन्त्री)
श्री पं० सुरेन्द्रनाथ विद्यालङ्कार (संयुक्त मन्त्री)
श्री पं० दीनबन्धु वेदशास्त्री (संयुक्त मन्त्री)
श्री पं० अवधबिहारीलाल एम० ए०, बी एल० साहित्याचार्य (प्रचार मन्त्री)

बाँये से दाहिने खड़े हुए—

श्री नित्यानन्दजी (जलूस मन्त्री)
श्री शान्तिस्वरूप गुप्त (अर्थ मन्त्री)
श्री कृष्णलाल खट्टर बी०ए० बी०टी० (पंडाल मंत्री)
श्री जोईया शाहजी (आतिथ्य मंत्री)
श्री ए० आर० भारद्वाज (कार्यालय मन्त्री)
श्री एन० डी० मोहन (स्वास्थ्य मन्त्री)
श्री श्रीराम खट्टर (यातायात मन्त्री)
श्री पं० रुद्रदेव शास्त्री विद्याभास्कर (मन्त्री, स्वयंसेवक विभाग)

अखिल भारतीय षष्ठ आर्यमहासम्मेलन

कलकत्ता।

आर्य समाजके सिद्धांतोंके प्रचारमें बाधा उपस्थित होने पर अथवा आर्य समाजके धार्मिक ग्रन्थों पर प्रतिबन्ध लगाये जाने पर या और इसी प्रकारकी व्यक्तिगत धार्मिक स्वतन्त्रतापर कुठाराघात होने पर आर्य समाजके नेताओंने आर्य महासम्मेलन की आवश्यकता अनुभवकी और अपने स्वत्वकी, अपने धार्मिक अधिकारों की और अपने धार्मिक ग्रन्थों की रक्षा के लिये कार्य-क्रम इन्हीं महासम्मेलनों में निश्चित किया गया। यह सम्मेलन आवश्यकतानुसार भारत के भिन्न २ स्थानों पर बुलाये गये। लाहौर, दिल्ली, शोलापुर, राजस्थान (अजमेर) फिर दिल्ली में इससे पूर्व ५ अधिवेशन आर्य महासम्मेलन के हुए।

आर्य समाज के सामाजिक सुधार के बहुत से कार्य जमाने की रफ्तार के साथ २ भिन्न २ संस्थाओं ने अपना लिये। राष्ट्र भाषा का प्रश्न हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने अपने हाथ में ले लिया, अछूतोद्धार का काम कांग्रेस ने अपना लिया और सनातनधर्म के धुरन्धर विद्वान भी शुद्धि के सम्बन्ध में आर्य समाज के साथ अपनी व्यवस्था देने लगे। लोगों ने समझा कि आर्य समाज की अब आवश्यकता नहीं रही और आर्य-समाज अपने सामने विशेष कार्य-क्रम न पाकर आलस्य की

नींद में सो रहा और अन्य मत मतान्तरों की तरह आर्य समाज को भी सर्व साधारण एक पृथक मत मानने लगे। ऐसे समय पर आवश्यक था कि आर्य महा सम्मेलन बुलाकर आर्य समाज को पुनः जाग्रत किया जाय और स्वतन्त्र भारत में अपने कार्यक्रम को निर्धारित किया जाय। इन्हीं बिचारों से प्रेरित हो कर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने गत जुलाई मास के अधिवेशन में आर्य महासम्मेलन ११-१२-१३ अक्टूबर १९४८ को बुलाने का बिचार किया। यह कलकत्ता क्या बंगालवासियों का सौभाग्य है जब कि सभाने कलकत्ता का निमन्त्रण स्वीकार किया।

बंगाल की आर्य समाजों ने अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए स्वागत-समिति का गठन १९ अगस्त १९४८ को किया और अंतरंग सदस्यों के अतिरिक्त निम्न लिखित पदाधिकारियों का चुनाव किया गया—

स्वागताध्यक्ष—	श्री पं० मिहिर चन्द्र धीमान्
उप स्वागताध्यक्ष—	,, सेठ कृष्णलाल जी पोद्दार
,,	,, रमेशचन्द्र वन्दोपाध्याय एम०, ए०
,,	,, सुन्दर दास लुगानी
,,	,, बद्री प्रसाद जी
,,	,, पं० दीपकदत्त चौधुरी.बार, एट ला

स्वागत मन्त्री— श्रीहंसराज हांडा बी.ए.एल.एल.बी
संयुक्त स्वागत मन्त्री— ,, पं० सुरेन्द्र नाथ विद्यालंकार
,, ,, पं० दीनबन्धु वेदशास्त्री
अर्थ मन्त्री— ,, शान्ति स्वरूप गुप्त
कार्यालय मन्त्री— ,, ए०आर० भारद्वाज बी० ए०
प्रचार मन्त्री— ,, पं० अवध विहारी लाल जी एम० ए०, बी० एल०
भोजन मन्त्री— ,, रखाराम जी गम्भीर
पण्डाल मन्त्री— ,, कृष्णलाल जी खट्टर बी.ए,बी.टी
स्वयंसेवक मन्त्री— ,, पं० रुद्रदेव जी शास्त्री
स्वागत मन्त्री— ,, श्री रामजी खट्टर
स्वास्थ्य मन्त्री-- ,, डा० एन० डी० मोहन
अतिथि सत्कार मन्त्री ,, जाइयाँ शाह जी
शोभा यात्रा मन्त्री-- ,, नित्यानन्द जी

स्वागत कारिणी सभा की अंतरङ्ग ने आगे चल कर आर्य समाज कलकत्ता के तत्कालीन मंत्री श्रीमान् रघुनन्दन लालजी को भी संयुक्त मंत्री के पद पर निर्वाचित किया।

इसके साथ ही सभी कार्य विभाग की सुव्यवस्था के लिये उपसमितियों का संगठन भी किया गया जो कि परामर्श कर अपने २ विभाग के कार्यों को प्रगति प्रदान कर सकें।

सब उपसमितियों ने अपना कार्य उत्साह पूर्वक प्रारम्भ कर दिया। स्वागत समिति के सदस्य अधिक संख्या में

बनाये जाने लगे। इसी समय देश की परिस्थिति में परिवर्तन हो गया और भारत की फौजों ने हैदराबाद रियासत में प्रवेश किया। ऐसी परिवर्तित परिस्थिति को लक्ष्य में रखते हुए स्वागत समिति ने महासम्मेलन की तिथियों में परिवर्तन कर इसे २४-२५-२६-दिसम्बर में करने का निश्चय किया गया। उन तिथियों में भी गुरुकुल वृन्दावन के उत्सव के कारण अड़चन जानकर स्वागत समिति को पुनः तिथियों में परिवर्तन करना पड़ा और ३१-दिसम्बर १९४८ तथा १-२-३ जनवरी १९४९ तदनुसार शुक्र, शनि, रवि, सोमवार को महासम्मेलन करने का निश्चय किया गया। समाचार पत्रों, पोस्टर, हैण्डबिल तथा पुस्तिकाओं (Pamphlets) द्वारा समस्त भारत वर्ष की आर्य समाजों तक महासम्मेलन के सबन्ध में समाचार पहुंचाये गये और परिणाम स्वरूप आर्य समाजों के प्रतिनिधियों एवं दर्शकों की नामावली स्वागत समिति के कार्यालय में दैनिक पहुचने लगी।

कलकत्ता जैसे विशाल नगर में जहाँ स्थानाभाव से रहना तथा राशन के कारण भोजन की सदा समस्या रहती है--इतनी अधिक संख्या में बाहर से आने वालों का समाचार आने से सुव्यवस्था के लिये चिन्तित होना आवश्यक था और परमपिता की असीम कृपा है कि स्वागत समिति के सभी सदस्यों के आर्थिक सहयोग, यथासाध्य परिश्रम एवं सद्भावना से सभी तरह की सुव्यवस्था करने में सफलता मिल सकी। अभ्यागतों की

सेवामें यदि किसी प्रकार की त्रुटि रह गयी हो तो वह क्षम्य है।

महासम्मेलन के सभाध्यक्ष के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार स्वागत समिति ने ४ व्यक्तियों के नाम सभी प्रतिनिधि सभाओं के पास चुनाव के लिये भेजे और बहुसम्मति से श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त-स्पीकर सी० पी० एसेम्बली का नाम सभाध्यक्ष के लिये निर्वाचित हुआ।

इसके अतिरिक्त-महासम्मेलन के अवसर पर विद्वत्सम्मेलन, गोरक्षासम्मेलन, आर्य-भाषासम्मेलन तथा महिला सम्मेलन करने का निश्चय किया गया। विद्वत्सम्मेलन के आयोजन का कार्य श्री रमाकान्त जी शास्त्री, गोरक्षासम्मेलन का श्री सेठ कृष्णलाल जी पोद्दार, आर्य भाषा सम्मेलन का श्री अवधविहारी लाल जी तथा महिला सम्मेलन का श्रीमती प्रकाशवती जी कालरा तथा श्रीमती कौशल्या देवी जी हांडा के ऊपर सौंपा गया।

महासम्मेलन की तिथियों के समीप आते ही इस गुरुतर कार्य की जिम्मेवारी स्वागत समिति के सभी सदस्य अनुभव करने लगे तथा इस कार्य में सहयोग देने के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि का कार्यालय भी दिल्ली से कलकत्ता २२ दिसम्बर को पहुंच गया। इसके साथ ही श्री ओमूप्रकाश जी पुरुषार्थी अपने आर्य वीरों के साथ सहयोग के लिये पहुंच गये तथा अधिकारियों के कार्य में यथाशक्ति हाथ बँटाते रहे।

चिर प्रतीक्षा के बाद ३१ दिसम्बर का दिन भी आ पहुंचा और बड़ी सजधज और उत्साह के साथ अपने मनोनीत सभापति का स्वागत जलूस निकालने की तैयारियां होने लगी। प्रातःकाल ८ बजे से आर्य भाई-बहनें-लड़के-लड़कियां और आर्य वीर केसरिया बाना पहिने हुए गिरीश पार्क में ओ३म् के झण्डे के नीचे इकट्ठे होने लगे। महर्षि दयानन्द की जय, वैदिक धर्म की जय, स्वामी श्रद्धानन्द की जय के नारों से सारा मुहल्ला गुंजायमान होने लगा। देखते देखते दो मील लम्बा विशाल जलूस विवेकानन्द रोड से होकर जगन्नाथघाट रोड की तरफ ९ बजे चल पड़ा जलूस में सब से प्रथम ओ३म् का ध्वजा लिये-आर्य वीर थे-उनके पीछे से सेमुलिया एलेटिक क्लब का बैंड बजता जा रहा था, उनके पीछे आर्य समाज बड़ा-बाजार के सदस्य सुन्दर वाक्यों में लिखे प्लकार्ड लिये हुए चल रहे थे। जलूस में संस्थाओं का क्रम निम्न प्रकार से रखा गया था—

आर्य समाज बड़ाबाजार के पीछे-दीप्तिसंघ का २४ व्यक्तियों का बैंड सुसज्जित वेश में, आर्य वीर दल मुंगेर, आर्यकन्या-महाविद्यालय कलकत्ता की कन्यायें तथा अध्यापिकाएं, आर्य विद्यालय कलकत्ता के छात्र एवं अध्यापक, नेशनल स्पोर्टिङ्ग क्लब का बैंड, आर्य वीर दल जोड़ा बागान (कलकत्ता), आयसमाज शाहाबाद (आरा), आर्यसमाज़ बैरकपुर-आर्यसमाज संथालपर-गना, आर्यसमाज पटना, बिहार प्रान्त की साधुमण्डली,

कन्या गुरुकुल हाथरस की कन्यायें, स्त्री आर्य समाज अलीगढ़ स्त्री आर्य समाज भवानीपुर, आर्य समाज टिटागढ़, आर्य समाज झरिया, आर्य समाज दीवानहाल दिल्ली, आर्य समाज गाजियाबाद, आर्य समाज इच्छापुर, आर्यसमाज रानीकेसराय आजमगढ़, आर्य समाज जौनपुर, आर्य समाज बराबड़ी आर्य समाज काँचरापाड़ा, आर्य समाज चापदानी, बिहार प्रान्तों के आर्य समाजों के सम्मिलित सदस्य, आर्य समाज बेरकपुर, आर्य समाज हावड़ा, आर्य समाज एवं डी-ए-वी-हाई स्कूल आसनसोल, दक्षिण कलकत्ता आर्य समाज, दक्षिण कलकत्ता आर्यविद्यालय, आर्य समाज खिदिरपुर, आर्य समाज कलकत्ता, और आर्य वीर दल बिहार प्रान्त के बीच एक सुसज्जित मोटर पर मनोनीत प्रधान श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त, स्वागत समिति के अध्यक्ष श्री मिहिरचन्द जी धीमान्, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति तथा सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री गंगाप्रसाद जी उपाध्याय विराजमान थे। उनकी मोटर के पीछे अनेक मोटर और लारियाँ चल रही थी जिनपर बहुत से बच्चे, स्त्रियाँ और वृद्ध पुरुष बैठे हुए जलूस का साथ दे रहे थे। जलूस जगन्नाथ-घाट रोड, रानी राशमनी एवेन्यू, हरिसन रोड, कालेज स्ट्रीट, कार्नवालिस स्ट्रीट तथा बीडेन स्ट्रीट होता हुआ महासम्मेलन के निश्चित स्थान बीडन पार्क में १२ बजे दोपहर समाप्त हुआ। रास्ते में आर्य समाज बड़ाबाजार, आर्य समाज कलकत्ता एवं

अन्य समाजों द्वारा मान्य अतिथियों की पुष्प मालाओं से अभ्यर्थना की गई। जलूस में वेदमन्त्र पाठ, सुन्दर भजन, सुसज्जित बैंड पार्टियों के सुमधुर वाद्य एवं वैदिक धर्म के नारों ने कलकत्ता शहर के वातावरण में एक अजीब लहर सी पैदा कर दी और सर्व साधारण को महासम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये आमन्त्रित किया।

झण्डोत्तोलन

विराट जलूस के बीडन पार्क में एकत्र होने के उपरान्त १२ बजे मनोनीत प्रधान श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त ने वैदिक संस्कृति के प्रतीक लालरंग के ओ३म् ध्वज को फहराया और अपने सारगर्भित छोटे से भाषण में झण्डे की महिमा तथा उपयोगिता बखान की और कहा कि इस ध्वजा का सम्मान समस्त भूमण्डल में होना चाहिये-क्यों कि यह झण्डा अत्याचारों का प्रतीक नहीं, बल्कि विश्व के सुख एवं शान्ति का प्रतीक है। ऋषि दयानन्द ने ओ३म् के झण्डे के रूप में संसार को सुख और शान्ति प्रदान की है।

स्वागताध्यक्ष पं० मिहिरचन्द जी धीमान् ने भी इस अवसर पर झण्डे की महत्ता पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् आर्यवीर दल का परेड प्रदर्शन हुआ और उन्होंने आर्य वीरों को सम्बोधित करते हुए कहा कि मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि आर्य नव-युवकों के हृदय में सेवा की भावना जाग्रत हो चुकी है और इस भावना का प्रसार इस 'ओ३म्' के ध्वज के नीचे रहकर

करना चाहिये। तत्पश्चात् बैंड द्वारा झण्डे को सलामी दी गई और १२॥ बजे झण्डोत्तोलन का कार्य समाप्त हुआ।

आर्य महासम्मेलन वृहद् अधिवेशन।

आर्य महासम्मेलन के अधिवेशन के लिये एक विशाल पण्डाल १० हजार व्यक्तियों के बैठने के लिये बनाया गया था और सुन्दर वैदिक वाक्यों तथा मन्त्रों द्वारा सजाया गया था। बीच में एक सुन्दर मंच पर दो राजकीय कुर्सियाँ रखी गई थीं। उसी मंच के पीछे ५०० व्यक्तियों के बैठने के लिये एक और मंच बनाया गया था जहां साधु-सन्यासी, उपदेशक, तथा विशेष अतिथियों के बैठने की व्यवस्था की गई थी इसके अतिरिक्त पत्रकारों, स्वागत समिति के सदस्यों, सभी प्रान्तों के आर्य समाजों के प्रतिनिधियों, महिलाओं, एवं दर्शकों के लिये पृथक २ स्थान निश्चित किये गये थे। ध्वनि विस्तारक यन्त्र की व्यवस्था थी। २॥ बजे दोपहरसे ही पंडाल में लोगों के आने का तांता बंध गया और ३ बजने से पूर्व ही सभी अपने २ निश्चित स्थान पर आकर बैठ गये और उत्सुकता से माननीय गवर्नर श्री डा० कैलाशनाथ काटजू के आने की प्रतीक्षा करने लगे। पण्डाल में प्रवेश कार्डों द्वारा होने पर भी पण्डाल एक दम भर गया। ठीक ३ बजे पश्चिम बंगाल के गवर्नर महोदय पधारे और मुख्यद्वार पर ही आर्य समाज के नेताओं ने आकर स्वागत किया और सम्मान पूर्वक मंच पर ले जाकर हमारे मनोनीत प्रधान जी के साथ सुसज्जित कुर्सी पर बैठाया।

स्वागत समिति के अध्यक्ष श्री मिहिरचन्दजी धीमान ने समिति की ओरसे गवर्नर महोदय का स्वागत किया। पश्चात् सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाके प्रधान पं० इन्द्रजी ने उनके गुणों और विद्वत्ता की प्रशंसा की तथा महासम्मेलन के कार्यको प्रारम्भ करने की प्रार्थना की। तदुपरान्त वहुमूल्य हार गवर्नर महोदयको और मनोनीत प्रधान को पहनाया गया।

तत्पश्चात् हाथरस कन्या गुरुकुल की छात्राओंने वेदमन्त्रों का सस्वर पाठ किया और वन्देंमातरम् के राष्ट्रीयगान से कार्य प्रारम्भ हुआ। माननीय गवर्नर महोदय ने आर्य समाज से अपना आजीवन सम्बन्ध बताते हुए आर्य समाज के आदर्शों और कार्यों की प्रशंसा की तथा पौन घंटे तक सुन्दर सुललित ओजस्वी भाषामें अपने विचार प्रकट किये। ये विचार वास्तव में आर्य समाज के लिये गौरवपूर्ण है, कि थोड़े ही समयमें शिक्षित समुदाय में आर्य समाज कितना गहरा असर पैदा कर चुका है। भाषण का पूरा विवरण परिशिष्ट में देखिये।

माननीय गर्वनर महोदय के भाषण के पश्चात् महासम्मेलन की ओर से गर्वनर महोदय को धन्यवाद दिया गया और वे अपने अगले कार्यक्रम के लिये चले गये।

उनके जाने के पश्चात् आर्य महासम्मेलन के प्रधान पद के लिये प्रत्येक प्रांत की ओर से श्री घनश्याम सिंहजी गुप्त के नाम का प्रस्ताव-अनुमोदन एवं समर्थन किया गया।

प्रस्ताव—सर्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाके प्रधान मंत्री श्री पं० गङ्गाप्रसादजी उपाध्याय ने उपस्थित किया। संयुक्त प्रांत की ओर से श्री राजगुरु पं० धुरेन्द्रजी शास्त्री, विहार प्रांतकी ओर से श्री स्वामी अभेदानन्दजी महाराज, बंगाल प्रांत की ओरसे श्री पं० दीनबन्धुजी वेद शास्त्री, तथा श्री पं० मिहिरचन्दजी धीमान्, राजपूताना को ओरसे श्री कुंवर चांदकरणजी शारदा, बम्बई प्रांत की ओरसे श्री पं० विजयशङ्करजी, पञ्जाब प्रांत की ओरसे श्री महात्मा खुशहालचन्दजी तथा महाशय कृष्णजी ने अनुमोदन एवं समर्थन किया तथा पुष्प मालाओं से प्रधानजीका स्वागत किया गया। प्रधानजी ने संक्षिप्त शब्दों में इस स्वागत सत्कार एवं सम्मान प्रदान करने के लिये हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की तथा स्वागत समिति के अध्यक्ष श्री मिहिरचन्दजी धीमान् से अपना भाषण सम्मेलन में उपस्थित करने के लिये प्रार्थना की।

श्री मिहिरचन्दजी धीमान् ने भाषण प्रारम्भ किया और आर्य समाज क्या था और क्या है और भविष्य में कैसा होना चाहिये इस पर अपने विचार एक घंटे के विस्तृत भाषण में प्रकट किये।

तत्पश्चात् महासम्मेलन के प्रधानजी ने अपना भाषण पढ़ा। स्वागताध्यक्ष और प्रधानजी के भाषण परिशिष्ट में देखिये।

१ जनवरी १९४९

आर्य सम्मेलन का दूसरे दिन का कार्य मध्यान्ह दो बजे से बीडन स्कायर के विशाल पण्डाल में प्रारम्भ हुआ। मंच पर

श्री प्रधान जी के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० तथा श्री पं० ज्ञानचन्द्र जी बी० ए० बिराज मान थे।

सर्व प्रथम आर्य महासम्मेलन की सफलता की कामना करते हुए देश के विभिन्न नेताओं और विद्वानों के सन्देश पढ़कर सुनाये गये। इनमें से विहार के गवर्नर माननीय श्री माधव श्रीहरि अणे, श्री सीतारमैय्या जी, डा० राजेन्द्र प्रसाद जी भारतीय रसद विभाग के मन्त्री श्री जयराम दास दौलतराम, श्री जगजीवन रामजी, श्री डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी, हैदराबाद स्थित भारत सरकार के भूतपूर्व एजेन्ट जनरल श्री कन्हैया लाल माणिक लाल मुन्शी, भारत सरकार के स्वास्थ्य विभाग की मन्त्रिणी श्रीमती राजकुमारी अमृतकौर, राजा महेन्द्र प्रताप तथा महा पंडित राहुल सांकृत्यायन जी के सन्देश विशेष उल्लेखनीय हैं।

पहला प्रस्ताव प्रधान जी की ओर से विश्ववन्द्य महात्मा गान्धी, महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज, महामना श्री पं०-मदन मोहन जी मालवीय, श्री पं० सुधाकर जी एम० ए०, पं० चन्द्रगुप्त जी वेदालङ्कार, श्री डा० मुंजे, नेता जी सुभाषचन्द्र बोस आदि के निधन पर शोक प्रस्ताव के रूपमें रखा गया। दिवंगत आत्माओं की शान्ति और सद्गति के लिये सब आर्यों ने खड़े होकर प्रार्थना की।

शोक प्रस्ताव

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी

(क) यह सम्मेलन श्री पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी के निधन पर अत्यन्त शोक प्रकट करता है। पूज्य स्वामी जी महाराज ने अपने ५० वर्ष के काय काल में आर्य समाज की सर्वतोभावेन सेवा की और उसकी अवस्था को बहुत उन्नत किया। श्री स्वामी जी महाराज आर्य जगत के प्राण थे। उनका प्रभाव असाधारण था। वे प्रौढ़ लेखक, प्रभावशाली वक्ता, सफल नेता और उच्च कोटि के प्रबन्धक थे। उनके नेतृत्व में आर्य समाज को हैदराबाद दक्षिण और सिन्ध के सत्याग्रहों में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई। अत्मदर्शन, मृत्यु और परलोक, उपनिषद् भाष्य आदि आदि उनकी चमत्कृत कृतियां आर्य जगत को सदैव लाभ पहुंचाती रहेंगी। ऐसे सम्मान्य नेता के वियोग से समस्त आर्य जगत् दुःखी है और ईश्वर से प्रार्थी हैं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

श्री पूज्य महात्मा गान्धी जी

(ख) यह महा सम्मेलन सत्य और अहिंसा के परमोपासक प्राचीन भारतीय आर्य्य संस्कृति के परम भक्त विश्ववन्द्य पूज्य महात्मा गान्धी जी की हत्या पर हार्दिक दुःख और रोष प्रकट करता है और उनके त्याग, तप, परोपकार, सव भूत दया, विश्व

बन्धुत्व आदि गुणों एवं देश तथा समाज के उद्धार और विश्व शान्त्यर्थ की गयी बहूमूल्य सेवाओं के लिये उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

श्री प्रो० सुधाकर जी

(ग) यह सम्मेलन सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व मंत्री श्री सुधाकर जो एम० ए० के निधन पर हार्दिक दुःख प्रकट करता है और उनके निधन को आर्य समाज की महती क्षति समझता है।

श्री प्रो० जी ने लगभग निरन्तर १४ वर्ष तक सभा के मंत्री पद पर कार्य करते हुए विशेषतः हैदराबाद सत्याग्रह के समय रक्षा मंत्री के रूप में आर्य समाज की बहुत बड़ी सेवा की जिसके लिये आर्य जगत् उनका बहुत ऋणी है। उन्होंने अपने हिन्दी और अङ्गरेजी के साहित्य से आर्य समाज के गौरव को भी बढ़ाया है। यह सम्मेलन कृतज्ञतापूर्ण भावों में उनकी सेवाओं का स्मरण करता है।

(घ) यह सम्मेलन आर्य जाति तथा आर्य समाज के निम्न लिखित नेताओं तथा अन्य उत्साही कार्यकर्ताओं और देवियों के निधन पर दुःख प्रकाशित करते हुए उनकी आय जाति तथा आर्य समाज के प्रति की गई सेवाओं के लिए श्रद्धांजलि अर्पित करता तथा परमात्मा से दिवंगत आत्माओं की सद्गति के लिये प्रार्थना करता है।

अन्य आर्यपुरुष तथा नेता

१. श्री बा० श्याम सुन्दरलाल जी वकील मैनपुरी, २. श्री राजा ज्वालाप्रसाद जी, ३. श्री रासविहारी तिवारी जी, ४. श्री पं० चन्द्रगुप्त जी वेदालंकार, ५. श्री पं० सिद्धगोपाल जी, ६. श्री मा० लक्ष्मण जी, ७. श्री प्रिंसिपल रामलाल जी, ८. श्री हरगोविन्द जी गुप्त, ६. श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी झज्झर; १०. श्री स्वामी ईश्वरानन्द जी बिहार, ११. श्री गोपीसिंह जी बिहार, १२. श्री अर्जुनदेव जी लाहौर, १३. श्री भाई वंशीलाल जी, १४ श्री पं० राजाराम जी शास्त्री, १५. श्री पं० वजीरचन्द्र जी शर्मा, १६. श्री शहीद परमानन्द जी लाहौर, १७ श्री परमानन्द जी खन्ना क्वेटा, १८. श्री अमरचन्द्र जी शारदा अजमेर, १६. पं० महेन्द्रचन्द्र जी बड़ौदा, २०. श्री भाई परमानन्द जी, २१. श्री डा० बालकृष्ण जी मुंजे, २२, श्री नृसिंह चिन्तामणि केलकर, २३, श्रीमती सुभद्रा कुमारी जी चौहान, २४, श्री विष्णुदास जी बांसल, २५, श्री पं० व्यासदेव जी शास्त्री २६ श्री स्वा० संतोषानन्द जी, २७, पं० भवानी प्रसाद जी।

श्री पं० मदनमोहन जी मालवीय

यह सम्मेलन महामना पं० मदनमोहन जी मालवीय के निधन को देश और जाति की महती क्षति समझता है। श्री मालवीय जी देश के बहूमूल्य रत्न थे। उन्होंने अपनी आभा से इस देश का बड़ा गौरव बढ़ाया था। उन्होंने देश की अनथक

सेवा की थी जो सदैव भारत के इतिहास में गौरवान्वित रहेगी। अपने परम श्रद्धास्पद नेता के वियोग से सचमुच आर्य जाति आज अकिंचन है।

श्री सुभाषचन्द्र जी बोस

यह सम्मेलन देश-रत्न श्री सुभाषचन्द्र जी बोस के निधन पर हार्दिक दुःख का प्रकाश करता है। उनकी सेवाओं के लिए देशवासी सदैव उनके ऋणी रहेंगे।

निश्चय सं० २

आर्य समाज के ध्येय की घोषणा।

अनार्ष बुद्धि के कारण संसार की वर्तमान दशा अत्यन्य शोचनीय है, सर्वत्र असन्तोष, अशान्ति, वैर, विरोध, कलह, और सन्ताप दृष्टिगोचर होते हैं। जो प्रयत्न इस पारस्परिक अविश्वास तथा द्वेष भाव आदि को दूर करने के लिये किये जा रहे हैं वे सब असफल से हो रहे हैं। इस परिस्थिति को अत्यन्त असन्तोषजनक अनुभव करते हुए आर्य समाज निम्न-लिखित घोषणा का जो उसके मन्तव्यों से व्यक्त होती है और जिसका आर्य समाज अब तक प्रचार करता रहा है, व्यापक प्रचार करना अपना कतव्य समझता है। आय समाज का दृढ़ विश्वास है कि सत्य सनातन, सार्वभौम वैदिक धम के मुख्य सिद्धान्तों को समझ कर उन पर आचरण करने और
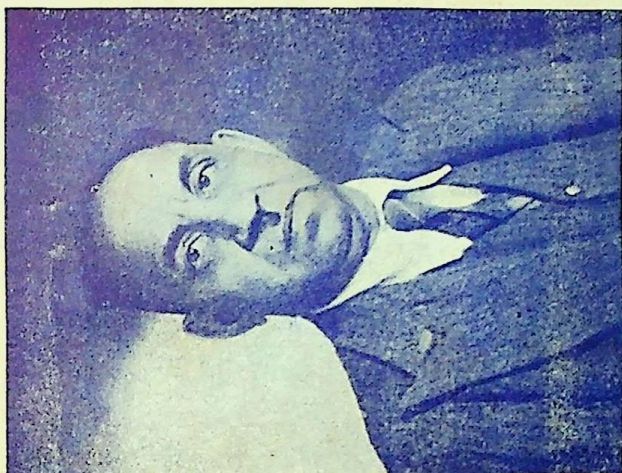
पं० मिहिरचन्द धीमान्, प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा बङ्गाल तथा आसाम)

स्वागताध्यक्ष
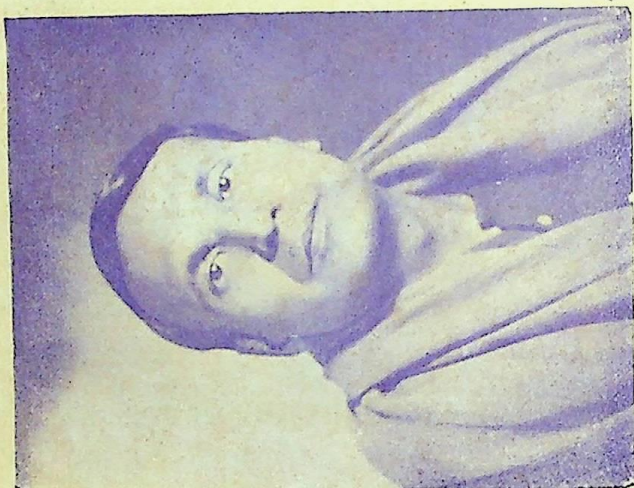
श्री हंसराज हांडा
(
स्वागत मन्त्री

पं० सुरेन्द्रनाथ विद्यालङ्कार (संयुक्त मन्त्री)

पं० दीनबन्धु वेदशास्त्री (संयुक्त मंत्री)
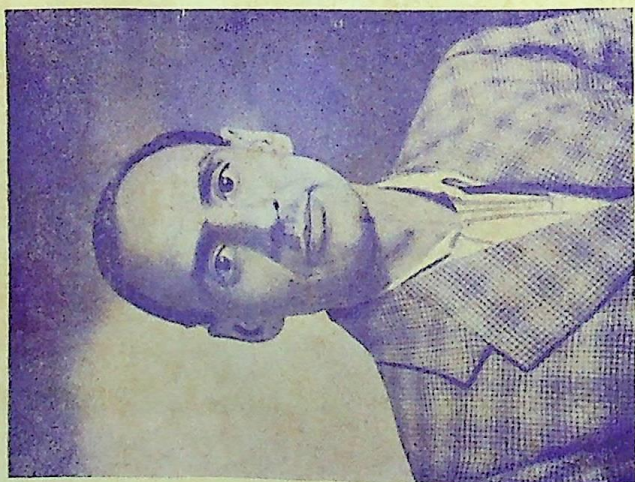
वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था के आधार पर सामाजिक संगठन करने पर ही मानव समाज का कल्याण सम्भव है अन्यथा नहीं, क्योंकि वेद समस्त धर्मों और शास्त्रों का मूल है, अत: उसकी आदर्श शिक्षाओं को समस्त समुचित उपायों से संसार में फैलाना विश्व शान्ति और कल्याण के लिए परमावश्यक है।

१. ईश्वर एक है, वह हम सब प्राणियों का पिता है, जीवों के पुरुषार्थ और ईश्वर की दया इन दोनों के सम्मिश्रग से ही संसार में सुख को प्राप्ति हो सकती है अत: प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि वह पुरुषार्थ और ईश्वर विश्वास इन दोनों गुणों को भली प्रकार धारण करे।

२. मनुष्य जाति एक है, उसमें राष्ट्रीय साम्प्रदायिक जाति और रंग तथा अन्य संकुचित भावनाओं के आधार पर द्वेष-पूर्ण तथा हिंसात्मक भेद-भाव करना संसार की अशान्ति का मुख्य कारण है, आर्यसमाज़ इस भेद-भाव को दूर करना अपना मुख्य कर्तव्य समझता है।

३. सच्ची नागरिकता का आधार वेद के आधार पर मनु महाराज के बताये हुए धृति, क्षमा आदि १० लक्षण तथा यम, नियमादि हो सकते हैं, इनके अपनाये बिना मनुष्य सच्चा नागरिक नहीं बन सकता अत: प्रत्येक आर्य का इन लक्षगों को अपनाना, और प्रचार करना आवश्यक कर्तव्य है।

४. मनुष्य की सच्ची उन्नति आध्यात्मिक एवं आधिभौतिक समृद्धि के समन्वय से ही हो सकती है अत: आर्य समाज का

२

उद्देश्य है कि जीवन के इन दोनों विभागों पर पूरा बल दिया जाय।

यह प्रस्ताव आर्य जगत के तपस्वी संन्यासी श्री स्वामी स्वतंत्रानन्द जी महाराज ने उपस्थित किया। दीनबन्धु जी ने प्रस्ताव का बंगला अनुवाद पढ़कर सुनाया। राजगुरु श्री पं० धुरेन्द्र जी शास्त्री तथा राजस्थान केसरी कुंवर चांदकरण जी शारदा के अनुमोदन एवं समर्थन के पश्चात् सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

निश्चय सं० ३

भारतस्थ आर्य समाजों का भावी कार्यक्रम

यह सम्मेलन निश्चय करता है कि भारत में स्थित समस्त आय समाजों को अगले वर्षों में निम्नलिखित कार्यों पर विशेष बल देना चाहिये।

१. समस्त आर्य समाजों की शक्ति को केन्द्रित करना।

२. ऐसे साधन उत्पन्न करना जिनसे आवश्यकता पड़ने पर समस्त समाज की संगठन शक्ति का सुगमता से लाभ उठाया जा सके।

३. समाज के प्रेस को शक्तिशाली बनाना।

४. समाज के मंच को अधिक आदरणीय, गम्भीर, उत्तरदायित्वपूर्ण एवं संगठित बनाना।

५. ग्रामवासियों, कृषकों, श्रमजीवियों, विद्यार्थियों एवं महिलाओं में विशेष प्रचार तथा कार्यक्रम की व्यवस्था करना।

६. भारतवर्ष में जाति-पांति, छूआछूत, मादक द्रव्य सेवनादि को दूर करने के लिये व्यावहारिक उपाय सोचकर उन्हें क्रियात्मक रूप देना।

७. प्रत्येक आर्य में यह भावना जागृत करना कि आश्रम व्यवस्थानुसार धर्मपूर्वक अपने परिवार और देश की आर्थिक व्यवस्था को उन्नत करना उसका कर्तव्य है।

८. वैदिक धर्म मनुष्य मात्र के लिये है। अतः जो व्यक्ति या समूह वैदिक धर्म या वैदिक संस्कृति को अपनावें अथवा अपनाना चाहें उनकी शिक्षा और दीक्षा के सम्बन्ध में उचित व्यवस्था करना तथा उनके साथ उदारतापूर्वक सामाजिक सद्-व्यवहार के लिये परिस्थिति उत्पन्न करना जिससे उनको किसी कष्ट, असुविधा अथवा भेद-भाव का अनुभव न हो।

९. समाज के नर-नारियों में ऐसी भावना उत्पन्न करना जिससे उनको वैदिक शिक्षा पर चलते हुए वैयक्तिक तथा पारिवारिक सुख और शान्ति का अधिक से अधिक लाभ हो सके। इस उद्देश्य से यह सम्मेलन प्रत्येक आर्य समाज से अनुरोध करता है कि वह समाज मन्दिरों में दैनिक संध्या, वेद पाठ, हवन तथा सत्संग का आयोजन करे।

१०. वैदिक साहित्य की अभिवृद्धि प्रचार और प्रसार का उचित प्रबन्ध करना।

११. देश की लौकिक राजनीति को आध्यात्मिकता से प्रभावित करने के लिये सनातन वैदिक राजनीति के सिद्धान्तों का प्रचार करना कराना।

१२. विदेश में उच्चकोटि का साहित्य और प्रचारक भेज कर विदेशस्थ समाजों को उन्नतिशील बनाना, विदेश में आर्य गौरव को स्थापित करना तथा नवीन आर्य समाजों की स्थापना द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार क्षेत्र को विस्तृत करना।

१३. नवयुवकों को अपनी ओर आकृष्ट करने तथा आर्य समाज की सदस्यता के योग्य बनाने के लिए आर्यकुमार सभाओं को पूर्णरूपेण सहयोग प्रदान करना।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री पं० गंगा प्रसादजी उपाध्याय एम० ए० ने यह प्रस्ताव उपस्थित किया। प्रस्ताव का अनुमोदन डी० ए० बी० कालेज लखनऊ के प्रिन्सिपल श्री महेन्द्र प्रताप शास्त्री ने किया। श्री पं० दीनबन्धु जीने बङ्ग भाषा में प्रस्ताव का समर्थन किया। गुरुकुल चित्तौड़-गढ़ के आचार्य श्री स्वामी व्रतानन्द जी तथा श्री उमेशचन्द्रजी ने प्रस्ताव में कुछ शब्द और जोड़ दिये जाने का सुझाव रखा और प्रस्तावक द्वारा स्वीकृत किये जाने पर सर्व सम्मति से प्रस्ताव स्वीकार किया गया।

निश्चय सं० ४

हिन्दू कोड बिल

आर्य समाज सामाजिक सुधार का सदा पक्षपाती रहा है, और रहेगा। स्त्रियों की अथवा अन्य किसी भी समुदाय की उन्नति, उनके विकास, और उनके उचित अधिकारों के लिए आर्य समाज लड़ता रहा है, इस दृष्टि से यद्यपि हिन्दू कोड बिल के कुछ प्रावधानों की आर्य समाज पुष्टि करता है तथापि क्योंकि हिन्दू कोड बिल में ऐसे बहुत से गम्भीर प्रावधान है जो हिन्दू ला में मौलिक परिवर्तन करते हैं, इनका विरोध यद्यपि हिन्दू जनता कर रही है, इन प्रावधानों के लिए हिन्दू जनता की इस प्रकार सम्मति नहीं ली गई है, जिससे यह कहा जा सके कि इनमें उनकी सहमति है, और फिर हमारा शासन असाम्प्रदायिक है और अभी संविधान सभा ने यह निश्चय किया है कि भारतवष में एक विधि व्यवहार संहिता (Uniform Civil Code) हो अतः इस सम्मेलन की यह सम्मति है कि वर्तमान संविधान सभा को चाहिये कि वह अभी हिन्दू कोड बिल को पारित न करे।

आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रांत के मन्त्री पं० रामदत्त जी शुक्लने इस प्रस्ताव को पेश किया। लखनऊ की श्रीमती अक्षय कुमारी जी के अनुमोदन तथा प्रसिद्ध विद्वान श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार के जोरदार समर्थन के पश्चात् प्रस्ताव सर्व

सम्मति से स्वीकृत हुआ। तथा महासम्मेलन का कार्य अगले दिन तक के लिये स्थगित कर दिया गया।

निश्चय सं० ५

पंजाब की सम्पत्ति

पश्चिमी पाकिस्तान में आर्य समाज की और समाज की संस्थाओं की करोड़ों रुपयों की हानि हुई है जिसकी यथोचित रक्षा एवं क्षतिपूर्ति होनी चाहिये, इसके अतिरिक्त छूटे हुए पवित्र मन्दिरों, शिक्षणालयों, पुस्तकालयों, तथा अन्य संस्थाओं के विषय में भी उचित कार्यबाही करनी हैं, जो भारत सरकार और पाकिस्तान सरकार के स्तर से ही (गवर्नमेन्ट लेविल पर) हो सकती है न कि व्यक्तिगत प्रयत्नों से।

यह सब कार्य आय समाज के हित में ठीक २ होसके इस के लिये यह सम्मेलन निम्न लिखित सज्जनों की एक समिति बनाता है :—

१. श्री लाला देशबन्धु जी (संयोजक)।
२. श्री बख्शी टेकचन्द जी।
३. श्री लाला खुशहाल चन्द जी।
४. श्री म० कृष्ण जी।
५. श्री माननीय घनश्याम सिंह जी गुप्त।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान और दिल्ली के उर्दू दैनिक प्रताप के संचालक श्री महाशय कृष्णजी ने यह

प्रस्ताव उपस्थित किया। मिलाप दैनिक पत्र के संस्थापक श्री महात्मा खुशहालचन्दजी ने बड़े मार्मिक शब्दों में प्रस्ताव का अनुमोदन किया और श्री मिहिरचन्दजी धीमानके जोरदार समर्थन के साथ सर्व-सम्मति से प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

तदुपरान्त सम्मिलित सन्ध्योपासना श्री राजगुरु पं० धुरेन्द्र जी शास्त्री ने कराई, और ८ बजे से राष्ट्र भाषा सम्मेलन का कार्य प्रारम्भ हुआ। राष्ट्रभाषा सम्मेलन का सभापतित्व श्री डा० रघुवीर जी एम० ए० पी० एच० डी ने किया।

सभापतिजीने अपने विद्वत्ता पूर्ण भाषण में बताया कि भारत की राष्ट्रभाषा केवल आर्यभाषा ही हो सकती है और संख्या के अनुसार, वैज्ञानिक दृष्टि से आर्यभाषा (हिन्दी) में ही ऐसी क्षमता है कि भारत की राष्ट्र भाषा बन सके जो क्षमता कि प्रान्तीय भाषाओं में नहीं। इसके साथ ही देवनागरी लिपि स्वतन्त्र भारत की लिपि होगी। हिन्दुस्तानी राष्ट्र की भाषा नहीं बन सकती और फारसी लिपि को देवनागरी के समान पद नहीं दिया जा सकता। कारण फारसी लिपि भारत के किसी भी प्रान्त की लिपि नहीं और न हिन्दुस्तानी किसी प्रान्त की भाषा है। इसलिये ऐसी भाषा जिसका संस्कृत से तथा प्रान्तीय सभी भाषाओं से निकटतम सम्पर्क है उसे ही राष्ट्र भाषा बनाकर उसके साहित्य को अग्रसर करने का प्रयत्न करना चाहिये। उनके भाषणके अतिरिक्त पं० अवधविहारी लालजी एम० ए० बी० एल०, स्वामी अभेदानन्द जी महाराज, स्वामी मेधानन्द जी महाराज, पं०

धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति आदि कई विद्वानों के भाषण हुए और देवनागरी लिपि राष्ट्र की लिपि और आर्य भाषा (हिन्दी) राष्ट्रभाषा सम्बन्धी प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

२ जनवरी का कार्य-क्रम

आर्य महासम्मेलन के विशाल पण्डाल में २ जनवरी को प्रातः काल ६ बजे से आर्य विद्वान् श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के सभापतित्व में विद्वत्सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। सर्व प्रथम स्वागताध्यक्ष श्री मिहिरचन्द जी धीमान ने देश के विभिन्न स्थानों से आये हुए आर्य विद्वानों का स्वागत करते हुए कहा कि आर्य विद्वान और संन्यासी आर्य जगत के पथ प्रदर्शक हैं। आर्य सभ्यता और आर्य संस्कृति के वास्तविक रूप को जनता के समक्ष रखकर पाश्चात्य सभ्यता के भौतिकवादी युग में परिवर्तन ला सकते हैं और महर्षि के स्वप्न कृण्वन्तो विश्वमार्यम को पूरा कर सकते हैं।

तदुपरान्त विद्वत्सम्मेलन के प्रधान श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने अपना भाषण प्रारम्भ किया। उन्होंने स्वतन्त्र भारत में आर्य समाज की आवश्यकता को बताते हुए कहा कि आर्य समाज का आन्तरिक संगठन होना चाहिये। आर्य समाज राजनीति के वैदिक आदर्शों को जनता के समक्ष रखकर आर्य सभ्यता और संस्कृति का उत्थान कर सकता है।

विद्वत्सम्मेलन में कलकत्ता विश्वविद्यालय के अध्यापक श्री चिन्न स्वामी आर्य विद्वान् पं० भगवद्दत्त जी, पं० बुद्धदेव विद्या-

लङ्कार तथा और भी कई विद्वानों के भाषण हुए और सम्मेलन का कार्य १२ बजे सफलता पूर्वक समाप्त हुआ।

आर्य महासम्मेलन का द्वितीय दिवस

आर्य महा सम्मेलन का वृहद् अधिवेशन पुनः २ बजे से विशाल पंडाल में श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त के सभापतित्व में प्रारम्भ हुआ। आज के प्रस्ताव भी अपना विशेष महत्त्व रखते हैं।

निश्चय सं० ६

भारत के नये विधान में भारत के किसी भी सम्प्रदाय के लिये कोई किसी भी प्रकार की रियायत न रक्खी जाय, ब्रिटिश सरकार ने राज्य प्रबन्ध में, सम्प्रदायों तथा मतों को पृथक २ अधिकार दे रक्खे थे। उसका भयंकर परिणाम देखा जा चुका है, अतएव अब स्वतंत्र भारत में किसी समुदाय के लिये सीटें और और नौकरियां रिज़र्व न की जावें और सब के लिये सम्मिलित निर्वाचन हो और नौकरियों में केवल योग्यता को समक्ष रखा जाय, तभी साम्प्रदायिकता का विष हमारे राष्ट्र से दूर हो सकेगा।

निश्चय सं० ७

यतः भारतीय संस्कृति की आधार शिला संस्कृत साहित्य है, अतः संस्कृत का अध्ययन प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है, संस्कृत भाषा और संस्कृत साहित्य की शिक्षाको भारतीय बालकों

की हाई स्कूल कक्षा तक अनिवार्य किया जाय। यह सम्मेलन भारत सरकार तथा प्रान्तीय सरकारों से यह भी अनुरोध करता है कि वह प्रतिवर्ष अपने बजट में संस्कृत भाषा के अमुद्रित ग्रन्थों के प्रकाशन के लिये समुचित राशि रक्खा करे।

निश्चय सं० ८

राष्ट्र भाषा और राज्य भाषा

अंग्रेजों की दासता से भारतवर्ष के मुक्त होने के पश्चात् अब यह प्रायः निर्विवाद है कि अंग्रेजी भाषा के साम्राज्य का भी अन्त होकर रहेगा, अंग्रेजी भाषा का स्थान राष्ट्र भाषा के रूप में कौनसी भाषा ले यह प्रश्न अब केवल बौद्धिक विचार कोटि में ही सीमित नहीं रह गया वरन अब तो वह स्वभावतः क्रियात्मक महत्व का हो गया है, इस सम्मेलन की सम्मति में प्रान्तों और विविध रियासतों की भाषायें तो उनकी अपनी प्रान्तीय भाषायें ही होंगी, कम से कम उस काल तक जब तक कि राष्ट्र भाषा सर्वव्यापी न हो जावे।

केन्द्रीयशासन को भाषा तो हिन्दी और लिपि देवनागरी ही होनी चाहिये यह इस सम्मेलन की स्पष्ट सम्मति है। केन्द्र में हिन्दी के साथ २ उर्दू भाषा और अरबी लिपि को रखने के लिये कोई भी कारण नहीं है। बंगाली, मराठी, तेलगू आदि अन्य प्रान्तीय भाषाओं की अपेक्षा उर्दू भाषा और अरबी लिपि की कोई विशेषता नहीं कि जिसके कारण वह उन भाषाओं की

अपेक्षा हिन्दी के साथ केन्द्रीय शासन की भाषा स्वीकार की जावे, योग्यता जनसंख्या आदि की दृष्टि से तो बंगला, तेलगू आदि भाषाओं का स्थान आवेगा ।

भाषा का प्रभाव किसी देश के निवासियों के राष्ट्रीय विचारों पर उनकी संस्कृति पर हुये बिना नहीं रह सकता, जिस भाषा की दृष्टि स्वदेशकी ओर न होकर विदेश की ओर हो वह पृथक्त्व की भावना प्रेरित करती है । इस विचार से देखा जावे तो पाकिस्तान के बनाने में उर्दू भाषा और अरबी लिपिने बौद्धिक पृष्ठ भूमि तैयार की इस से इनकार नहीं किया जा सकता, परन्तु इन सब बातोंको छोड़कर केवल राष्ट्रीयता की दृष्टि से किंवा अन्य प्रान्तीय भाषाओं के साथ सहचारिता को दृष्टि से ही इस प्रश्न पर विचार करें तो भी यह स्पष्ट है कि राष्ट्र भाषा उर्दू या हिन्दुस्तानी और लिपि अरबी नहीं हो सकती वह हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि ही हो सकती है जो कि अन्य प्रान्तीय भाषाओं और लिपियों के निकटतम है ।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि हमारी भाषा संस्कृत निष्ठ हिन्दी होगी परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि जो शब्द विदेशी भाषाओं से हमारी भाषाओं में आगये हैं और वे हमारी भाषा का अंग बन गये हैं, उनका निरर्थक वहिष्कार किया जाय, हम अपनी भाषा को सम्पम्न बनाना चाहते हैं, इसके लिये कोई बात हम ऐसी नहीं करेंगे जो इसमें बाधक हो ।

गुरुकुल काँगड़ी के सुयोग्य स्नातक श्री पं० धर्मपाल जी विद्यालंकार ने यह प्रस्ताव उपस्थित किया। श्री प्रकाश वीरजी ने ओजस्वी शब्दों में प्रस्ताव का अनुमोदन किया, श्री पं० दीनबन्धु जी वेदशास्त्री तथा ब्रह्मचारी उषबुध जी के समर्थन पर प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

निश्चय सं० ९

षष्ठ आर्य महासम्मेलन को आज की यह सभा पश्चिमी बंगाल के माननीय मंत्री श्री मोहनीमोहन बर्म्मन की निर्मम हत्या पर हार्दिक शोक प्रकट करती है, परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा शोक संतप्त परिवार को इस वज्राघात के सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

(ख) यह सम्मेलन सर अकबर हैदरी गवर्नर आसाम की असामयिक मृत्यु पर शोक प्रकट करता है।

निश्चय सं० १०

राजनीति

क. अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन, भारतवासियों को बधाई देता है कि उन्होंने राजनैतिक दासता के अभिशाप से मुक्ति पाकर स्वधीनता को प्राप्त कर लिया है। आर्य समाजियों ने अपने देश के स्वातन्त्र्य युद्ध में जो प्रशंसनीय असाधारण भाग लिया है उस पर यह सम्मेलन उन्हें हार्दिक साधुवाद देता है।

ख. यद्यपि स्वाधीनता प्राप्ति के साथ देश का जो विभाजन हुआ है उसे यह सम्मेलन अत्यन्त खेदजनक और आर्य विगर्हित तथा देश हित विरोधी समझता है, तब भी यह संतोष अनुभव करता है कि अपने भविष्य निर्माण का जो स्वतन्त्र अवसर मिला है उससे लाभ उठाकर भारतीय राष्ट्र न केवल अपनी ही सर्वतोमुखी उन्नति करने में समर्थ होगा, कालान्तर में अपनी खोई हुई एकता को भी प्राप्त कर लेगा।

ग. इस अवसर पर यह सम्मेलन देशवाशियों को यह चेतावनी देना चाहता है कि उन्होंने सत्य, अहिंसा, तप, धीरता और सच्चरित्रतादि जिन गुणों की सहायता से स्वराज्य प्राप्त किया है उन की रक्षा दृढ़ता से तभी हो सकेगी यदि राष्ट्र ने उन गुणों को पहले से भी अधिक धारण किया। अन्यथा यदि शक्ति प्राप्त होने पर उन गुणों की उपेक्षा करदी तो संभावना है कि पूर्वापेक्षया भी अधिक कठोर दुःख उठाने पड़े।

घ. किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र की रक्षा और उन्नति के लिये आवश्यक है कि उसका प्रत्येक नागरिक राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करे, इस कारण यह सम्मेलन भारत के प्रत्येक आर्य नर नारी को आदेश देता है कि अपने देश की राजनीति में पूर्ण रूप से भाग ले, साथ ही यह बात उन्हें सदा ध्यान में रखनी चाहिए कि

वे व्यवहार में राजनैतिक वेदोक्त आदर्शों से अणुमात्र भी विचलित न हों।

च. आर्य संस्कृति तथा आर्य सभ्यता की दृष्टि से वर्तमान राजनीति को अधिक से अधिक प्रभावित करने के साधनों पर विचार करने तथा आर्य समाज की राजनैतिक मांगों को अंकित करने के लिये निम्न लिखित सज्जनों की समिति बनाई जाय जो ३ मास के अन्दर सार्वदेशिक सभा में अपनी रिपोर्ट उपस्थित कर दे :—

१. पं० रामदत्त जी शुक्ल (संयोजक)
२. श्री पं० भगवद्दत्त जी
३. श्री मिहिर चन्द जी धीमान्
४. श्री पं० ज्ञानचन्द्र जी
५. श्री म० कृष्ण जी
६. श्री पं० विनायकराव जी विद्यालंकार
७. श्री पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति
८. श्री स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ
९. श्री कुंवर चान्द करण जी शारदा
१० श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार
११. श्री अभेदानन्द जी
१२. श्री पं० द्विजेन्द्रनाथ जी शास्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति ने अपना यह प्रस्ताव उपस्थित करते हुए भारत

सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया कि धर्म के ही बल पर हम लोग राष्ट्रीय आन्दोलन तथा सत्याग्रह संग्राम में विजयी हुए हैं; महात्मा गान्धी ने अपनी राजनीति में धर्म और अहिंसा तथा सत्य की पुट देकर ही सफलता प्राप्त की। हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि आज की राजनीतिमें आध्यात्मिकता तथा धार्मिकता का प्रवेश आवश्यक है। और बिना इसके व्यापक बुराइयाँ दूर नहीं हो सकतीं। आर्य जनता को देश की राजनीति में पूर्ण रूप से भाग लेने के लिये आह्वान करते हुए उन्होंने प्रस्ताव उपस्थित किया। श्री महात्मा खुशहाल चन्द जी के अनुमोदन और पं० ज्ञानेन्द्र जो सूफ़ी के समर्थन पर प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

निश्चय संख्या ११

साहित्य सत्कारनिधि

आर्य समाज में वैदिक सिद्धान्तों के प्रतिपादनार्थ और विरोधियों के आक्षेपों के समाधानार्थ निर्मित गवेषणापूर्ण उच्चकोटिके प्रामाणिक ग्रन्थों की न्यूनता को दूर करने के लिये यह आवश्यक है कि लेखकों को पुरस्कार प्रदान करने की प्रथा को अपना कर साहित्य की सृजना और वृद्धि की जाय इसके लिये सार्वदेशिक सभाके अधिकार में एक निधि "साहित्य सत्कार निधि" के नाम से स्थापित की जावे। धनी, मानी, दानी महानुभावों को प्रेरणा की जावे कि वे अपने वा अपने किसी

संबन्धी वा मित्र के नाम पर स्थिर पुरस्कार राशि को व्यवस्था करें। अन्य प्रकार से भी इस निधि में धन एकत्रित किया जावे।

निश्चय सं० १२

शुद्धि

क. पाकिस्तान बनने के परिणाम स्वरूप जो भयंकर काण्ड हुये, उनमें एक यह भी है कि अनेक हिन्दू भाइयों और बहनों को अपना धर्म परिवर्तन करना पड़ा। इन भाई बहिनों को पुनः आर्य (हिन्दू) धर्म और समाजमें लाने का कार्य आय समाज का मुख्य कर्त्तव्य है। आर्य समाज यह सदैव मानता रहा है कि धर्म और समाज का द्वार प्रत्येक धर्मावलम्बी के लिये खुला है जो कि स्वेच्छा से अपनाना चाहें, इसलिये शुद्धि इसके कार्यक्रम का एक विशेष भाग रहा है। यह सम्मेलन समस्त आर्य पुरुषों, आर्य समाजों तथा आर्य प्रतिनिधि सभाओं को आदेश देता है कि वर्तमान में इस कार्य का मुख्यता देकर इसकी ओर विशेष ध्यान रक्खें, जिससे कि वे अब तक के बिछुड़े हुये भाई और बहिन जिन्हें आज तक किसी भी कारण धर्म परिवर्तन करना पड़ा है पुनः अपने पूर्वजों के प्राचीन धर्म्म में आ जायें और उनसे किसी प्रकार के भेद भाव का व्यवहार न किया जाय।

ख. अतः यह सम्मेलन यह आदेश देता है कि आय समाज, तथा प्रतिनिधि सभायें अपने अपने यहां इस कार्य के लिये

पूरा यत्न करें और अपने उपदेशकों को इस काम में अधिक समय लगाने के लिये। नियुक्त करें, यह काम गंभीरता और साहस के साथ चुपचाप होना चाहिये और सब समाजें अपने-अपने यहां के कार्य का पूरा-पूरा विवरण चाहे वह कितना भी स्वल्प हो प्रतिमास अपनी सभाओं को भेजती रहें।

ग. बड़े दुःख से कहना पड़ता है कि हमारी भारत सरकार अब तक भी पूर्व की भांति सदैव मुसलमानों को प्रसन्न रखने की नीति का अवलम्बन कर रही है जो कि न्याय पर आश्रित नहीं। अतः यह सम्मेलन सरकार से भी अत्यन्त प्रेम और आत्मीय भावना से प्रार्थना करता है कि वह शुद्धि के इस कार्य को असाम्प्रदायिक भावना से प्रेरित समझ कर इसमें हस्तक्षेप न करे क्योंकि भारतवर्ष का भविष्य इस बात पर बहुत अंशों में अवलम्बित है और लगभग डेढ़ करोड़ अन्य मतों में गये भाई हमारे रक्त के सम्बन्ध से बन्धु हैं।

श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने प्रस्ताव उपस्थित किया। श्री पं० वाचस्पति जी, पं० जगदीश चन्द्र जी हिमकर, सम्पादक दैनिक जागृति तथा श्री सत्यनारायण जी बी० ए० बी० टी० के जोरदार समर्थन के पश्चात् सर्व सम्मति से प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

निश्चय सं० १३

रेडियो

यह सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से अनुरोध करता है कि वह रेडियो विभाग के अधिकारियों से मिल कर ऐसी व्यवस्था करे कि जिससे प्रति सप्ताह वेद का पाठ तथा प्रवचन रेडियो पर हुआ करे, जिससे लोगों में धार्मिक जागृति उत्पन्न हो सके, इसके अतिरिक्त ऋषि दयानन्द के जन्म दिवस ऋषि निर्वाणोत्सव, आर्य समाज स्थापना दिवस, श्रद्धानन्द बलिदान जयन्ती आदि पर्वों के अवसर पर रेडियो पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया जावे और इस मांग को पूरा करने के लिये आर्य जगत् की ओर से प्रबल आन्दोलन भी किया जावे।

निश्चय सं० १४

अस्पृश्यता निवारण

अस्पृश्यता तथा छूतछात का अन्त करने के लिये नये विधान में जो नियम बनाया गया है उस पर आर्य समाज भारत विधान परिषद् को हार्दिक धन्यवाद देता है। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द का और आर्य समाज के ७५ वर्षों का एक पवित्र परिश्रम आज सफल हुआ।

निश्चय सं० १५

पूर्वी पंजाब यूनिवर्सिटी

पूर्वी पंजाब यूनिवर्सिटी ने अंगरेजी भाषा को अनिवार्य बना दिया है परन्तु संस्कृत को वहाँ अनिवार्य नहीं रखा गया। यह आर्य महा सम्मेलन यूनिवर्सिटी के निचय से विरोध प्रकट करता है और बलपूर्वक यह मांग करता है कि संकृत को अनिवार्य घोषित किया जाय।

निश्चय सं० १६

हिन्दू विश्वविद्यालय काशी

यह सम्मेलन इस पर अत्यन्त आश्चर्य प्रकट करता है कि काशी के हिन्दू विश्वविद्यालय के महाविद्यालय की पौरोहित्य कक्षा का द्वार केवल जन्म से ब्राह्मण कुलोत्पन्न पुरुषों के लिये ही खुला हुआ है अन्य कुलोत्पन्न पुरुषों तथा स्त्रियों के लिये वह बन्द है। यत्न करने पर भी उसे अन्यों के लिये नहीं खोला गया। यह सम्मेलन विश्वविद्यालय के अधिकारियों से अनुरोध करता है कि इन जाति भेद सूचक प्रतिबन्धों को तत्काल हटा देवें।

निश्चय सं० १७

सेना में प्रचार की व्यवस्था

भारत सरकार के अधीन सैनिक केन्द्रों में सैनिकों के पूजा-पाठ आदि के लिये मस्जिद, गुरुद्वारा तथा मन्दिर के लिये

स्थान दिये जाते हैं। इसी प्रकार आर्य सामाजिक सैनिकों को आध्यात्मिक सत्संग लगाने के लिये स्थान मिलने चाहिए तथा उनमें आध्यात्मिकता का प्रचार करने के लिये आय पुरोहित नियत करने चाहिएं।

निश्चय सं० १८

गोरक्षा

'क'

गौ दूध देकर तृप्त करती है, बैल हल चला कर मनुष्य के लिये अन्नादि उपजाता है, भार ढोकर मनुष्य का उपकार करता है। गोबर एवं गोमूत्र उत्तम खाद का काम करते हैं। गौ जाति से मनुष्य का विशेषकर आर्य जाति का धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय सम्बन्ध है। अतः गौओं की उन्नति तथा रक्षा के लिये यह सम्मेलन भारत सरकार तथा पश्चिमी बंगाल से सानुरोध प्रार्थना करता है कि—

क. गो हत्या सर्वथा, सर्वदा, के लिये राज्य व्यवस्था द्वारा निषिद्ध एवं दण्डनीय ठहराई जाय।

ख. अपाहिज, असमर्थ एवं अशक्त गौओं के लिये गोसेवा सदन जारी किये जाएं।

ग. सर्वांगी, हृष्ट पुष्ट एवं स्वस्थ समर्थ सांडों के द्वारा गो वंश के सुधार और उत्कर्ष के वैज्ञानिक साधनों की उन्नति की सामग्री प्रस्तुत करें।

घ. गो वंश की वृद्धि के लिये अत्यन्त आवश्यक चारे दाने की सुव्यवस्था के साथ-साथ स्थान २ पर गोचर भूमि की भी अनिवार्य व्यवस्था की जाय।

ङ. जो गोशालाएं, गो सेवा, गो वंश के सुधार एवं शुद्ध घी, शुद्ध दूध की उत्पत्ति का प्रबन्ध करें, उन्हें सुविधाएं प्रदान की जाएं।

च. वनस्पति, बनावटी घी के बनाने तथा बेचने पर प्रतिबन्ध लगाया जाय। केवल वनस्पति तेल के रूप में ही बन और बिक सके उसका उद्जनीकरण (हाईड्रोजिनेशन) न किया जाय ताकि उसका घी का रूप न बन पावे और लोग उसे घी में न मिला सकें।

(ख)

गौओं की प्रयोजनीयता एवं महत्त्व को विचार कर देश की अनेक म्युनिसिपल कमेटियों तथा डिस्ट्रिक्ट बोर्डों ने अपनी सीमा के भीतर गोबध बन्द कर दिया है, यह सम्मेलन कलकत्ता म्युनिसिपल कारपोरेशन तथा पश्चिमी बंगाल की उन म्युनिसिपल कमेटियों एवं डिस्ट्रिक्ट बोर्डों से जिन्होंने अभी तक गोहत्या को बन्द नहीं किया है, अनुरोध करता है कि वे देश हित को दृष्टि में रखते हुए अपनी-अपनी सीमा के अन्दर गोवध पर प्रतिबन्ध लगावें।

(ग)

गोवंश के ह्रास के कारण हमारी हानि हो रही है, दूध, दधि, घृत आदि का मिलना प्रायः दुलभ हो रहा है, मनुष्य जीवन के लिए इन पदार्थों की प्राप्ति के निमित्त गोरक्षा हमारे लिए एक अपरिहाय कार्य है अतः यह सम्मेलन जनता से बल पूर्वक अनुरोध करता है कि गोवंश सुधार तथा गो हत्या रोकने के लिऐ निम्नलिखित कार्य का अनुष्ठान ध्यान से करें।

क. गोवंश के सुधार के लिए उत्तम सांडों का ही प्रयोग करें।

ख. गोवध द्वारा प्राप्त चमड़े का व्यवहार सर्वथा बन्द कर दिया जाय।

ग. गोवंश की रक्षा, उन्नति एवं सुधार के किये सब प्रकार की सहायता एवं सहयोग देवें।

निश्चय सं० १९

आर्य वीर दल

यह सम्मेलन भारतीय नवयुवकों में चारित्रिक निर्माण एवं सांस्कृतिक समुन्नति को ध्यान में रखते हुए आर्यवीर दल के विकास की आवश्यकता अनुभव करता है और समस्त प्रांतीय व प्रादेशिक सभाओं तथा तत्सम्बंधी समस्त आर्य संस्थाओं से बलपूर्वक अनुरोध करता है कि वे आर्यवीर दल के संचालनार्थ सक्रिय सहयोग व सहायता प्रदान करें।

निश्चय सं० २०

यह सम्मेलन विहार प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के निमन्त्रण को सधन्यवाद स्वीकार करते हुये, निश्चय करता है कि अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन का आगामी अधिवेशन बिहार प्रान्त में किया जाय।

यह प्रस्ताव श्री ओमप्रकाश जी पुरुषार्थी ने उपस्थित किया। श्री बालदिवाकर हंस सेनापति आर्य वीरदल दिल्ली के अनुमोदन तथा श्री पं० रुद्रदेवजी शास्त्री, श्री वाचस्पतिजी, श्री विश्वबन्धुजी शास्त्री सेनापति आर्य वीरदल संयुक्त प्रांत और श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार के समर्थन के बाद सर्वसम्मति से प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

३ ज़नवरी १९४९

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ।

इस महासम्मेलन के अवसर पर सम्पूर्ण यजुर्वेद के मन्त्रों द्वारा २८ दिसम्बर १९४८ से ३ जनवरी १९४९ तक प्रतिदिन प्रातःकाल ६॥ बजे से सुसज्जित यज्ञशाला में यज्ञ किया गया। इसके ब्रह्मा श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज थे। आर्य गुरुकुल एटा के ब्रह्मचारी तथा स्थानीय पण्डित सस्वर वेदमन्त्र पाठ करते थे, प्रतिदिन एक-एक यजमान सपरिवार यज्ञ में सम्मिलित होते रहे और अपनी श्रद्धा के अनुसार दान देते रहे, यज्ञ के लिये श्री सेठ

करोड़ीमल जी से २ हज़ार रुपये दान स्वरूप प्राप्त हुए, यजमानों में श्री जाइयाँ शाहजी, श्री सेठ कृष्णलाल जी पोद्दार, श्री मोहनलाल जी पोद्दार, श्री हंसराज जो हांडा, के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। ३ जनवरी को प्रातःकाल यज्ञ की पूर्णाहुति की गई। यज्ञ के वास्तविक रूप पर श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी के भाषण भी प्रति दिन हुए और बहुत लोगोंने इससे लाभ उठाया।

३ जनवरी को प्रातःकाल ६ बजे से महासम्मेलन के बड़े पण्डाल में श्री पीयूष पाणि कविराज हरिबक्स जोशी काव्य-सांख्य स्मृति तीर्थ आयुर्वेद केसरी के सभापतित्व में शुद्धि सम्मेलन का आयोजन हुआ।

इस सम्मेलन में श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज, श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार आदि कई विद्वानों के भाषण हुए और शुद्धि के कार्य को अत्यावश्यक बताते हुए और परिवर्द्धित रूपसे चलाने का प्रस्ताव स्वीकार किया गया।

आर्य महिला सम्मेलन

मध्याह्न १२-३० बजे से महासम्मेलन के विस्तृत पण्डाल में श्रीमती शान्नो देवीजी एम० एल० ए० (पूर्वी पञ्जाब) के सभा-नेतृत्व में आर्य महिला सम्मेलन किया गया। महिलाओं की संख्या बहुत अधिक थी, इसकी सफलता का श्रेय श्रीमती कौशल्या देवीजी हाँडा एवं श्रीमती प्रकाशवती जी काबरा को है।

सबसे पूर्व सम्मेलन का कार्य प्रारम्भ करते हुए सभानेत्री जी ने महात्मा गान्धी के निधन पर शोक प्रस्ताव रक्खा और सब महिलाओं ने खड़े होकर प्रभु से प्रार्थना की।

दूसरे प्रस्ताव में अपहृत महिलाओं की समस्या पर विवेचना करते हुए आर्य कन्या महाविद्यालय जालन्धर की स्नातिका श्रीमती कौशल्या देवी प्रभाकर ने बताया कि देशके विभाजन से सबसे अधिक कष्ट महिलाओं को हुआ है और आततायियों के अत्याचारों का भी सामना बहुत सी बहिनों को करना पड़ा है और अभी तक उन्हीं के शिकंजे में पड़ी दुःख भोग रही हैं, और जो निकल कर वापिस आई भी हैं उन्हें भी अनेक परिवार के लोग लेनेसे इन्कार करते हैं। इसलिये यह महासम्मेलन भारत सरकार से मांग करता है कि इस प्रकार की उत्पीड़ित बहिनों के भरण-पोषण के लिये एक केन्द्रीय संस्था का निर्माण किया जाय और जो अभी तक भी दुष्टों के चक्र से नहीं निकाली जा सकीं हैं उन्हें शीघ्र ही निकालने की व्यवस्था की जाय।

श्री वसन्तलाल जी मुरारका की धर्मपत्नी श्रीमती रामदेवी जी मुरारका ने प्रस्ताव का अनुमोदन किया और कहा कि हमारा कर्तव्य है कि हम उन उत्पीड़ित बहिनों को गले लगायें और उनके कष्टों को दूर करने का यत्न करें। प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

कन्या गुरुकुल हाथरस की आचार्या श्रीमती लक्ष्मी देवीजी ने एक प्रस्ताव और उपस्थित किया जिसमें कहा गया कि देश के

आर्थिक संकट को दृष्टि में रखते हुए आवश्यक है कि प्रौढ़ स्त्रियों को भी शिक्षा देने के लिये केन्द्र बनाये जांय ताकि वे घरों में रहकर अपनी गरीबी को दूर करने में सहायक हों। प्रस्ताव का अनुमोदन श्रीमती प्रेमसुधाजी यतीने किया और कहा कि महिलाओं को फैशन त्याग कर अपनी दुःखी बहिनों की भलाई के लिये कुछ करना चाहिये।

श्री हंसराज जी हांडा की धर्मपत्नी श्री मती कौशल्या देवी जी हांडा ने प्रस्ताव का समर्थन जोरदार शब्दों में किया और कहा कि महर्षि दयानन्द ने जो बीज बोया था जिसे महात्मा गान्धी तथा हमारे अन्य नेताओं ने बलिदान के जलसे सींचकर फल-फूल देने लायक बनाया है, उसकी रक्षा हमें करनी चाहिये, परमात्मा की दयासे जो बहिनें हर तरह से समृद्ध हैं उन्हें समय का सदुपयोग करना चाहिये और दुःखी बहिनों की सेवा में तन-मन-धन से लग जाना चाहिये। श्रीमती यशोदा देवी और श्रीमती पार्वती देवी के समर्थन के पश्चात् सर्वसम्मति से प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

श्रीमती यशोदा देवी जी ने चतुर्थ प्रस्ताव को पेश करते हुए नवराष्ट्र निर्माण में महिलाओं की अधिक से अधिक सेवा की मांग की। यह हमारे यहां की माताओं का कर्तव्य है कि वे स्वयं शिक्षित होकर बच्चों के राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण एवं विकास करें। श्रीमती रेवादेवी जी के अनुमोदन तथा कुमारी कमला देवी गर्ग और श्रीमती चन्द्रमुखी जी के समर्थन के पश्चात् सर्व सम्मति से प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

पाँचवाँ प्रस्ताव श्रीमती अक्षय कुमारी जी ने प्रस्तावित हिन्दु कोड बिल के विरोध में करते हुए कहा कि अपनी भारतीय वैदिक संस्कृति में आस्था रखते हुए हम इस बिल का विरोध करती हैं, पश्चिमी राज्य से आये हुए सभ्यता को पश्चिमी राज्य के साथ ही साथ तिलांजलि दे देनी चाहिये। हमें राम राज्य की संस्कृति राम और सीता की, संस्कृति एवं सभ्यता को पुनः देशमें लाना है। श्रीमती हेमलता देवीजी ने प्रस्ताव का अनुमोदन किया। श्रीमती प्रकाशवती जी काबरा, श्रीमती कौशल्या देवीजी मलहोत्रा, श्रीमती दुर्गादेवी जी ने भी प्रस्ताव का समर्थन किया और प्रस्ताव बहु सम्मति से स्वीकृत हुआ।

अन्त में सभानेत्री श्रीमती शान्नो देवीजी के सारगर्भित भाषण हुए और कुमारी शान्ता देवी के राष्ट्रीय गीत के पश्चात् महिला सम्मेलन निर्विघ्न समाप्त हुआ।

सायंकाल ५।। बजे से आर्य वीरदल की ओर से शारीरिक प्रदर्शन हुआ, लाठी, छुरी, भाला वगैरह के खेल दिखाये गये। श्री पं० रुद्रदेवजी शास्त्री के आसन एवं धनुर्वेद के प्रदर्शन हुए।

तत्पश्चात् श्री हंसराज जी हांडा ने स्वागत मन्त्री की ओर से सभी आगत सज्जनों आर्य वीरों, दान दाताओं, कार्पोरेशन, पुलिस विभाग तथा सहयोगी कार्मचारियों, एवं अधिकारियों को धन्यवाद दिया और शान्तिपाठ के साथ महासम्मेलन का ४ दिन का कार्य सफलता एवं उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

पश्चिमी बंगाल के गवर्नर श्री कैलाश नाथ जी काटजू ने अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन के छठे अधिवेशन का कलकत्ता बीडन पार्क में ३१-१२-४८ को सायंकाल ३ बजे उद्घाटन किया। उनके भाषण का सार इस प्रकार है :—

बहिनो और भाइयो !

मेरे बारे में प्रो० इन्द्र जी ने बहुत कुछ प्रशंसात्मक बातें कहीं हैं, परन्तु न मैं विद्वान् हूं और न शास्त्रों का पण्डित, हां, मैं सत्य बोलने की कोशिश करता हूं ! मैंने कचहरी के लिये विद्या सीखी थी और वह कचहरी में ही समाप्त हो गई। मैं तो जीवन के इस मार्ग में कुछ सीखने का यत्न कर रहा हूं।

मुझे मालूम न था कि आर्यसमाज कलकत्ता तक पहुंच चुकी है। मैं तो अजमेर, पंजाब और युक्त प्रान्त तक ही आर्य-समाज को फैला हुआ समझता था। मैं ५ वर्ष पर्यन्त लाहौर में रहा था। वहां डो० ए० बो० कालेज व आर्य समाज में जाता था और म० हंसराज जी के सम्पर्क में भी आया था। डी० ए० बी० कालेज कानपुर के स्तम्भ बा० आनन्द स्वरूप जी से मेरा काफी परिचय था, घनिष्ठता थी। वे मेरे बड़े गुरु भी थे।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारतवर्ष और जाति के लिये जो काम किया है वह अनमोल है। जब हमारा देश गिरा हुआ था और पश्चिमी सभ्यता एवं अंग्रेजी शासन का देशवासियों पर रङ्ग चढ़ चुका था और उनका जादू काम कर रहा था तब हमारे देशवासी खाने-पीने और वेश-भूषा आदि में उस सभ्यता के रङ्ग

में रङ्ग कर अपने को समझने लगे थे कि हम हेय हैं और हमारा खजाना खाली है। तभी इस प्रवाह को रोकने के लिये इस देश में महान् आत्माओं का जन्म हुआ। उनमें सबसे महान् आत्मा महर्षि दयानन्द थे। बंगाल में ऐसी आत्मा रामकृष्ण परमहंस थे जिनके शिष्य स्वामी विवेकानन्द थे। स्वामी दयानन्द जी ने देश में प्रचार किया और एक प्रकार की आग लगा दी। उन्होंने बड़ी जागृति पैदा की। जिन महानुभावों ने भारतवर्ष में राष्ट्रीय भवन की बुनियाद का निर्माण किया उनमें ऋषि का स्थान सब से ऊंचा है। इस समय ये सब घटनाएं हमारी आंखों के सामने साधारण सी देख पड़ती हैं परन्तु अब से पचास वर्ष बाद जब इतिहास लिखा जायगा तब इनका वास्तविक महत्व समझा जायगा।

स्वामी दयानन्द ने महात्मा गांधी से ३० वष पूर्व ही अपना संदेश पंजाब और संयुक्त प्रान्त के गांवों में पहुंचा दिया था। उनका यह कार्य बहुत दूरदर्शितापूर्ण और महत्व का कार्य था।

ईसाई गिरजे में, मुसलमान मसजिद में, हिन्दू मन्दिर में परमात्मा की पूजा करता है। कोई उसे निराकार रूप में पूजता है और कोई साकार रूप में परन्तु इनमें से कोई भी परमात्मा की सत्ता से इन्कार नहीं कर सकता। सब उसको अपना पिता मानते हैं। अतः हम सब को भाई-भाई के रूप में रहना चाहिये। भारतीय शासन-विधान में सब मत वालों के साथ समान व्यवहार होना चाहिये।

मेरा अपना यह विश्वास है कि भारत के प्राचीन मार्ग के ग्रहण करने से ही मनुष्य जाति का कल्याण हो सकता है। सब कहते हैं भारत स्वतन्त्र हो गया। निःसन्देह हम अंग्रेजी शासन से मुक्त हो गए। हम अब १००० वर्ष के बाद स्वतंत्र हुए हैं। उस समूचे काल में हम भारतवासी घोर अन्धकार में थे। अब सूर्य का उदय हुआ है। अब रास्ता दीखता है। हमारे नेता ठीक कहते हैं कि हमको प्रान्तीयता में नहीं बहना चाहिये और भारत की एकता को अक्षुण्ण बनाये रखना चाहिये। भारत एक है। हम सब भारतवासी हैं। पहले ज़माने में हमारी सभ्यता एक थी। सब प्रान्तों में भी एक जैसी सभ्यता ही थी। परन्तु इसी सभ्यता को मानने वाला पंजाब का हिन्दू मालाबार के हिन्दू के प्रति कोई सहानुभूति न रखता था और न उसके लिये उसके हृदय में कोई स्थान देख पड़ता था। इसी प्रकार अन्य प्रान्तों के हिन्दुओं के हृदय में भी। राजा केवल अपनी और अपने राज्य की चिन्ता करता था। उसके सिवाय दूसरा राजा मरे वा जिये। परन्तु अब हम में इतनी एकता उत्पन्न हो गई है कि यदि बंगाल के किसी कोने में धमाका होता है तो मद्रास वा बम्बई का हिन्दू उस धमाके का अपने बंगाल के भाई के समान ही भय और चिन्ता अनुभव करता है। यह कितने सौभाग्य की बात है कि हम हिन्दुओं में परस्पर विश्वास और विचारों की समानता इतनी आ गई है कि हम में से प्रत्येक समझने लग गया है कि हम पृथक् रह कर नष्ट हो जायंगे।

भारत के इतिहास में यह अभूतपूर्व घटना है। प्रत्येक भारत-वासी को यह समझना चाहिये कि हम सब एक नाव में सवार हैं। ऐसा नहीं हो सकता कि हम में से १० ही नदी पार करलें। यदि डूबेंगे तो सब और बचेंगे तो सब। इस एकता की रक्षा में आर्य समाज बड़ा योग दे सकता है। ऋषि दयानन्द ने भी यही सिखाया है। हमारी सभ्यता एक ही होनी चाहिये। मद्रासी भाई अम्बाले में जाकर यह अनुभव करे कि मैं अपने घर में आ गया हूं। वह अपने को विदेशी अनुभव न करे। प्रान्तों में खान-पान रहन-सहन और अन्य रीति-रिवाजों में भले ही भिन्नता रहे परन्तु दिलों में सदैव एकता रहनी चाहिये।

मेरे पास भाषा के गुरु "गुप्त जो" (घनश्यामसिंह जी गुप्त आर्य सम्मेलन के सभापति) भी बैठे हैं अतः इस सम्बन्ध में मैं क्या कहूं? बंगाल व उड़ीसा में भाषा के सम्बन्ध में मुझे बहुत अनुभव हुआ है। भाषा के सम्बन्ध में आर्य समाज बहुत बड़ा काम कर रहा है। बंगाल की कहावत के अनुसार भाषा दो प्रकार की होती हैं। एक बोल-चाल की दूसरी साहित्यिक जिसे साधु-भाषा कहते हैं। ये दोनों अलग-अलग रही हैं और रहेंगी। बच्चों का शिक्षण स्थानीय भाषा के द्वारा होना चाहिए। हमारी प्राचीन सभ्यता बताती है कि हमारी साधु-भाषा संस्कृत है। हर प्रान्त में साधु-भाषा संस्कृत ही होनी चाहिये। हिन्दी, बंगला, गुजराती मराठी, तामिल, मलयालम, तिलगू, कन्नड़ इन सब का शब्द भण्डार संस्कृत ही है। यह इन सब भाषाओं की जननी है।

मां को मत मारो। हमारी भाषा सदाबहार है। यह सदैव अपनी बेटियों को अपना धन देती रहेगी। हम संस्कृत के पण्डितों को आज-कल की भाषामें दकियानूसी कहते हैं। परन्तु याद रखना चाहिये कि यही पण्डित और गांव वाले थे जिन्होंने भयंकर आक्रमणों में हमारी जाति और संस्कृति की रक्षा की थी। हिन्दू जाति क्यों जीवित है? जब इसके देखते-देखते बेबोलियन इत्यादि की सभ्यताएं व जातियां नष्ट हो गईं। पता नहीं यह जाति दो हजार वर्षसे, पांच हजार वर्ष से, दस हजार वर्ष से वा न जाने कबसे जीवित चली आई है। इसलिए कि इसका पालन-पोषण व विकास आर्य संस्कृति की गोद में हुआ है जिसका आधार संस्कृत भाषा है। इसलिए जातीय दृष्टि से जीवित रहने के लिये प्रत्येक भारतवासी को संस्कृत को अपनाना चाहिये। गुजराती मुसलमान गुजराती, बंगाली मुसलमान बंगला, इसी प्रकार अन्य प्रान्तों के मुसलमान बोल-चाल में लोकभाषा का प्रयोग करते हैं। यह प्रयोग बन्द न होगा। हां! इन सब की साधु-भाषा संस्कृत होने में कोई कठिनाई नहीं देख पड़ती। क्या हिन्दू क्या मुसलमान इसे चाव से अपना सकता है और साधु-भाषा का काम इसी भाषा से ले सकता है। मुझे आशा है कि १० वर्ष के भीतर भीतर संस्कृत भारत की राष्ट्रभाषा बन जायगी।

अब स्वतन्त्रता आने पर हमारे देश की स्त्रियों पर पुरुषों की अपेक्षा अधिक उत्तरदायित्व आ गया है। यदि पुरुषों पर रुपये में छः आने भार है तो स्त्रियों पर १० आने। उनमें शिक्षा का

पं० अवधविहारीलाल साहित्याचार्य एम०ए०, बी०एल०
प्रधानाध्यापक, द० क० आर्य विद्यालय (प्रचार मन्त्री)

श्री शान्तिस्वरूप गुप्त (अर्थ मन्त्री)
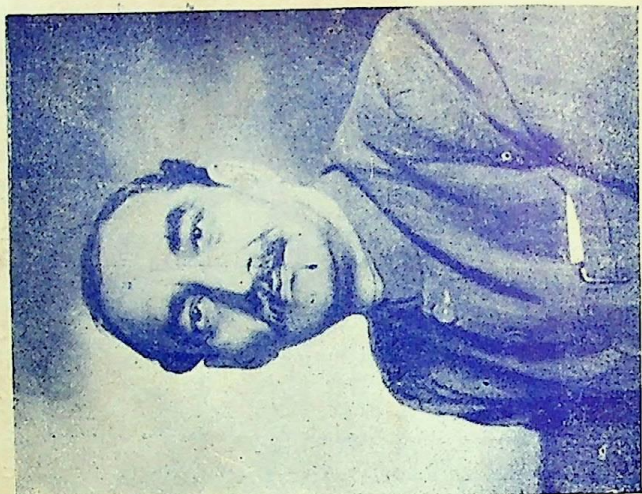
श्री ए० आर० भारद्वाज (कार्यालय मन्त्री)

श्री रखाराम गंभीर (भोजन गन्त्री)

प्रचार होना चाहिये जिससे वे ठीक प्रकार से अपने घरों को बना सकें, सन्तान पैदा कर सकें और उनका ठीक पालन व शिक्षण कर सकें। उनमें शिक्षा का प्रचार होना चाहिए। अब आबादी बहुत बढ़ गई है। माता-पिताओं पर सन्तान वृद्धि के कारण अपने बच्चों की परवरिश और शिक्षा का भार भी बेहद बढ़ गया है। जब मैं घूमने जाता हूं तो बाग में छोटे-छोटे बच्चों को देखता हूं। किसी बहिन का कोई बच्चा १ वर्ष का है, दूसरा २ वर्ष का, तीसरा तीन-साढ़े तीन साल का है। सन्तानों की उत्पत्ति में यह एक वर्ष या सवा वर्ष का अन्तर ही माता के स्वास्थ्य और आर्थिक दोनों दृष्टियों से हानिकारक है। सन्तान वृद्धि की इस गति को रोकने के लिये कुछ यत्न होना चाहिये। मेरी मां कहा करती थीं कि बच्चों की पैदाइश में ३-४ वर्ष का अन्तर होना चाहिये। तभी माताओं के स्वास्थ्य ठीक रहते और बच्चे मां-बाप पर अवांछनीय भार प्रतीत नहीं होते।

स्त्रियों में शिक्षा और जागृति के कार्य को आर्यसमाज को विशेष रूपसे अपने हाथ में लेना चाहिये। पहिला जमाना था ब्रिटिश सरकार आर्यसमाज को बाग़ी समझती वा सन्देह की दृष्टि से देखा करती थी। अब स्वतन्त्रता मिल गई है। अपना राज्य है। आर्यसमाज को अपना कार्य बढ़ाना चाहिए।

—*—

॥ ओ३म् ॥

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन षष्ठ अधिवेशन कलकत्ता के प्रधान श्रीघनश्याम सिंहजी गुप्त का भाषण।

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ॥

स्वागताध्यक्ष महोदय,
प्रतिनिधिगण, बहनो और भाइयो !

जो स्थान आपने मुझे देना स्वीकार किया है उसे ऐसे प्रख्यात व्यक्ति जैसे, बिहार के प्रान्तपति, परम श्रेष्ठ बापू जी अणे, माननीय डा० श्यामा प्रसादजी मुकरजी और हमारे आर्य समाज के परम मान्य नेता दिवंगत महात्मा नारायण स्वामीजी महाराज सुशोभित कर चुके हैं। मैंने उसे स्वीकार करने का साहस किया तो वह आप लोगों के प्रेम और अनुकम्पा के भरोसे न कि अपनी योग्यता अथवा शक्ति के कारण।

आर्य समाज की सेवाएं

हमारी इस पवित्र भूमि भारत ने अनादि काल से समय-समय पर महान् आत्माओं को जन्म दिया जिन्होंने अपने चरित्र तप और कार्यों से न केवल इस देश को वरन सारे संसार को ऊँचा किया। वर्तमान काल में भी दो नर-रत्न पैदा हुए, महर्षि

दयानन्द और महात्मा गान्धी, जिनके किये हुए उपकारों को भारतवर्ष कभी नहीं भूल सकता। दयानन्द का जन्म उस समय में हुआ जब कि हमारा सम्पूर्ण समाज एक ओर अन्धकार और कुरीतियों का शिकार था दूसरी ओर पश्चिम की चकाचौंध विमूढ़कर रही थी। स्त्रियों को पढ़ाना, समुद्र पार जाना, अपने धर्म का द्वार दूसरों के लिये खोलना पाप समझा जाता था। छूआ छूत, बाल विवाह आदि हजारों कुरीतियों ने घर जमाया हुआ था और धर्म के नाम पर अनेक अनर्थ हुआ करते थे। दयानन्द ने उन भ्रमों से हमें मुक्त करने और उन सब कुरीतियों को दूर करने का भगीरथ प्रयत्न किया। राजनैतिक क्षेत्र में कार्य करने वाले हमारे नेताओं को तो जनता का मान और जनता का उत्साह प्राप्त होता रहा परन्तु दयानन्द को उस समय सुधार का बीड़ा उठाने में साधारण जनता का विरोध, उनसे गालियां और उनके द्वारा अपमान ही मिलता रहा। इन सब की तनिक भी परवाह न करते हुए दयानन्द अपने प्रचार में आगे बढ़ते ही गये। और आज हम वह समय देख रहे हैं कि ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित प्रत्येक सामाजिक कार्य-क्रम को देश ने स्वीकार कर लिया है। इसे हम दयानन्द का दिग्विजय कहें तो अत्युक्ति न होगी।

पश्चिमी सभ्यता ने उस समय भारतीयों को चकाचौंध कर रक्खा था। और वास्तविकता की ओर ध्यान न देकर बाहरी चमक और झलक से लोग बहने लगे थे। रेल तार आदि

विज्ञान के आविष्कारों को पश्चिमी सभ्यता और पश्चिमी धर्म के कारण से हुआ मानने लगे थे और उन हमारी भावनाओं का पूरा उपयोग विदेशी मिशनरी करने लगे थे। भारत की सभ्यता और भारतीय धर्म के लिये पढ़े लिखे लोगों में अश्रद्धा होती जा रही थी। दयानन्द ने अपने अखण्ड विश्वास और अकाट्य तर्क से इन सब का खण्डन किया। जहाँ हमें अपने भीतरी अन्धकार से मुक्त किया वहां बाह्य चकाचौंध और भ्रम से हमें बचाया। इस भारत भूमि पर दयानन्द का उपकार इतना अधिक है कि आज भी उसका पूरा संतुलन करना कठिन है। मुझे निश्चय है कि इतिहास बतावेगा कि वर्तमान युग में भारत के उद्धारकों में दयानन्द सबसे प्रथम और महान् रहा।

शिक्षा सम्बन्धी क्षेत्र में भी दयानन्द की दिव्य दृष्टि की ओर मस्तक झुकाना होगा। मातृ भाषा द्वारा शिक्षा देने का कार्य-क्रम गुरुकुल में उस जमाने में आरम्भ किया गया जब कि सब उसकी हँसी उड़ाते थे। महात्मा मुंशीरामजी जो पीछे स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से प्रख्यात हुए आज से लग-भग ४५ वर्ष पूर्व यह प्रण करके निकले कि गुरुकुल खोल कर ही रहेंगे और उन्होंने अपना प्रण पूरा किया। जो गुरुकुल पहिले झोपड़ियों में इने-गिने ब्रह्मचारियों को लेकर खोला गया था वह शीघ्र ही एक विशाल विश्वविद्यालय के रूप में परिणत हुआ। मातृ भाषा द्वारा शिक्षा देने का सिद्धान्त अब सब मानने लगे हैं।

आर्य समाज ने शिक्षा के प्रचार में जितना कार्य किया है वह किसी से छिपा नहीं है। दलितोद्धार, स्त्री शिक्षा, बाल विवाह का निषेध, अपने पवित्र वैदिक धर्म का द्वार दूसरों के लिये समान रूप से खोलने आदि आदि सुधार के कार्यों में आर्य समाज अग्रसर रहा है यह सब को विदित है।

आर्य समाज का बलिदान

अपने आदर्शों के पालन करने में और इस भारत भूमि को ऊंचा उठाने में, आर्य समाज को पर्याप्त बलिदान भी देना पड़ा। सत्य और निर्भीकता की वेदी पर आर्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द का बलिदान हुआ। उसके पश्चात् एक के बाद एक लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, हैदराबाद सत्याग्रह के अनेक वीर इस बलि वेदी पर बलिदान होते रहे। धार्मिक प्रतिबन्धों को हटाने के लिये आर्य समाज ने कई युद्ध किये। हैदराबाद रियासत में जिस प्रकार के कठिन प्रतिबन्ध थे और जिस प्रकार की संगठित शक्ति का आर्य समाज को सामना करना पड़ा वह तो सब को विदित है। उसमें भी आर्य समाज पूर्ण यशस्वी रहा। सब को इसकी शंका थी कि उस प्रबल शक्ति के सामने आर्य समाज को झुकना होगा। कई बड़े-बड़े लोग यह समझते रहे कि जो रियासत बृटिश सरकार का इतना पक्का मित्र हो और जिसके लिये बृटिश सरकार की इतनी सद्भावनाएं हों, जहां की प्रजा भय के मारे कांपती हो और जिसने इस प्रकार के प्रतिबन्धों को स्थापित रखने में जमाने से कुशलता प्राप्त की हो जहां स्टेट कांग्रेस की भी प्रगति

कुछ न हो रही हो, वहाँ आर्य समाज क्यों कर सफल हो सकता है। परन्तु वैसी कठिन अवस्था में भी यद्यपि आर्य समाज समाज रूप से तात्कालिक राजनैतिक आन्दोलनों में भाग नहीं लेता रहा। तथापि यदि किसी समाज या संस्था पर बृटिश सरकार की बक्र दृष्टि सब से पहिले हुई तो वह आर्य समाज था। बृटिश सरकार ने सब से पहिले, आर्य समाज को ही अपने अस्तित्व के लिये भयानक समझा। उसके लिये ऐसा समझना स्वाभाविक भी था। मैं यह कहने के लिये क्षमा चाहूंगा कि यदि किसी समाज के या किसी संस्था के लोग अपनी संख्या के अनुपात से, इस पवित्र भारत को ऊंचा उठाने में उसकी कुरीतियों को आमूल नष्ट करके उसे हर प्रकार बलिष्ठ करने में देश प्रेम में मतवाले थे तो ये आर्य समाज के सदस्य थे। ऐसे समाज को बृटिश सरकार खतरनाक न समझे तो किसे समझे? इस खतरनाक समाज को कुचलने की नीति भी प्रयोग में लाई गई। परन्तु आर्य समाज प्रबल ही होता गया।

व्यक्तिगत रूप से आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य इस बात के लिये स्वतन्त्र रहा है कि वह किसी भी राजनैतिक संस्था का अनुयायी हो। उसे किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं, और आर्य समाजी देशके कार्य के लिये अपनी-अपनी रुचि और मनोवृत्ति के अनुसार राजनैतिक क्षेत्रों में कार्य करते रहे और अपना प्रभाव रखते रहे।

यह स्पष्ट है कि आर्य समाज एक शुद्ध धार्मिक संस्था है और

उसका कार्यक्रम धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में ही रहा। यह भी स्पष्ट है कि आर्य समाज की अपनी कोई राजनैतिक आकांक्षा भी नहीं रही और न है। परन्तु जहां कहीं ऐसी राजनैतिक परिस्थिति उत्पन्न हुई जिससे कि उसके धार्मिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर आक्रमण हुआ तब आर्य समाज उसका मुकाबला करने से नहीं चूका। इसलिये भी नहीं हिचका कि वैसा करने में किसी राजनैतिक क्षेत्र में उसका अतिक्रमण करना समझा जायगा वा किसी राजनैतिक शक्ति से विरोध करना होगा; इसका एक उदाहरण हैदराबाद रियासत में अपने धार्मिक और सांस्कृतिक सत्यों के लिये आर्य समाज का सत्याग्रह है।

जहां सामाजिक क्षेत्र में ऋषि दयानन्द का दिग्विजय हुआ है और शिक्षा सम्बन्धी क्षेत्र में भी उसकी बात मानी जा रही है वहां उसका राजनैतिक स्वप्न भी पूरा हुआ। हमारे राष्ट्र पिता महात्मा गान्धी के तपोबल से और उसके अतुल नेतृत्व के फल-स्वरूप हमें हमारा जन्म सिद्ध अधिकार स्वराज्य मिला परन्तु भारत के दो टुकड़े हुए और उस पृथक्करण की प्रक्रिया में जो भयानक और लज्जाजनक रक्तपात और कृतियां हुईं, उससे सबको दुःख हुए बिना नहीं रह सकता। स्वतन्त्रता का यह मूल्य है तो यह ठीक है कि हमें भयानक मूल्य देना पड़ा। परन्तु मेरा विश्वास है कि जो परिस्थिति उत्पन्न हो गई थी उसमें बंटवारा स्वीकार करने के अतिरिक्त इस प्रकार स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये कोई

दूसरी गति नहीं थी, और अब तो इसी में भलाई है कि हम यह मान कर ही चलें कि भारत का विभाजन एक सुनिश्चित बात है। कुछ लोग अब भी यह सोचते हैं कि हमें यह करना चाहिये और हमें वह करना चाहिये ताकि भारत का विभाजन अन्त हो। दो प्रकार की विचार धाराएं इस सम्बन्ध में थोड़ी बहुत मात्रा में पाई जाती हैं। एक वे जो परिस्थिति की मजबूरियों पर भरोसा रखते हैं और दूसरे जो प्रलोभनों पर। एक समझते हैं कि अमुक-अमुक परिस्थितियों का उत्पन्न होना अनिवार्य है जिससे पाकिस्तान और भारत का पुनः एक हुए बिना नहीं रहेगा। दूसरे कहते हैं कि हमें ऐसा करना चाहिये जिससे वे हमारी ओर आकर्षित हों और अन्त में इतने आकर्षित हो जावें कि दोनों एक दूसरे को प्रेमालिंगन करके एक हो जावें। मैं इन दोनों विचार का नहीं। मैं नहीं मानता कि कोई ऐसी अड़चन निकट भविष्य में होगी जो भारत और पाकिस्तान को एक होने के लिये बाध्य कर सके। मैं यह भी नहीं मानता कि हम कोई बात करके पाकिस्तान को अपनी ओर आकर्षित कर सकेंगे। जहां महात्मा गान्धी का सारा प्रयत्न किन्हीं भी शर्तों पर मिलाये रखने के लिये असफल रहा और अखण्ड भारत खण्डित होकर ही रहा, वहां यह समझना कि दूसरों का प्रयत्न इस प्रकार आकर्षित करेगा कि टूटी लकड़ी फिर जुड़ जावेगी नितान्त भ्रममूलक है। हमें अपनी कोई भी कार्यवाही इस दृष्टि से नहीं करनी चाहिये कि हम उससे पाकिस्तान वालों को किसी प्रकार

आकर्षित कर लेंगे। उस मनोवृत्ति से कोई भी लाभ नहीं बल्कि हानि होगी। अब तो मिलने की बात को अलग रख कर ही सारे व्यवहार नीति पूर्वक यथा योग्य होना चाहिये, और यदि कभी मिलने का प्रसङ्ग आया ही तो वह भारत की शर्तों में होगी न कि उनकी।

असाम्प्रदायिक राज्य

भारत को स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात् भारतकी राज्य प्रणाली क्या होगी इसमें किसी का मतभेद नहीं हो सकता। भारत एक विशाल देश है जहां अनादि काल से धार्मिक स्वतन्त्रता रही है। जब संसार धर्म के नाम से क्रूर और भयानक युद्ध करता रहा और एक धर्माबलम्बी दूसरे धर्मावलम्बियों के साथ धर्म के नाम पर क्रूर से क्रूर व्यवहार करता रहा तब यह हमारा पवित्र भारत धार्मिक स्वतन्त्रता के पवित्र सिद्धान्तों को क्रियात्मक रूप से पालन करता रहा। इतना ही नहीं बल्कि वह धार्मिक मदान्धता के कारण त्रस्त और निर्वासित लोगों को आश्रय भी देता रहा। नास्तिक भी स्वच्छन्द विचरते रहे और अपना प्रचार करते रहे। यहां पर धार्मिक स्वतन्त्रता के साथ-साथ विचार स्वातन्त्र्य भी रहा। कोई गेलोलियो यहां इसलिये दण्डित नहीं हुआ कि उसने यह प्रतिपादन किया कि पृथ्वी के चारों ओर सूर्य नहीं घूमता वरन् सूर्य के चारों ओर पृथ्वी घूमती है। धार्मिक विचार स्वातन्त्र्य, इस हमारे भारत की संस्कृति का एक आवश्यक अङ्ग रहा है। अतः आर्य समाज को सर्वथा मान्य है कि भारत का शासन

सर्वथा (सेकूलर) असाम्प्रदायिक हो और साम्प्रदायिक भावनाओं को प्रोत्साहन न दिया जाये। हमें हर प्रकार की साम्प्रदायिकता से बचना चाहिये। साम्प्रदायिकता के अनेक रूप हैं। एक तो पारदर्शी तरल और स्पष्ट (ट्रान्सपरेण्ट थिन सिम्पल) जिसे हरेक देख सकते हैं और जिसकी ओर प्रत्येक उंगली दिखा सकता है। परन्तु इससे भी भयानक एक दूसरी प्रकार की साम्प्रदायिकता होती है जो प्रायः राष्ट्रीयता की दुहाई देती है और राष्ट्रीयता का जामा पहिनती है। यह अपारदर्शी ठोस और अस्पष्ट (आपेक, थिक, और कम्प्लेक्स) होती है, और कई अंशों में पहिले की जननी होती है। प्रथम प्रकार वाली जहाँ साम्प्रदायिकता के आधार पर विशेष अधिकार और विशेष बातों की माँग करती है, वहां दूसरी प्रकार वाली सम्प्रदाय वादियों को प्रसन्न करने के लिए उन्हें अपनी ओर खींचने या खींचे रखने के निमित्त उनकी अनुचित मांगों को स्वीकार करतो है और प्रोत्साहन देती है और अचरज यह है कि इसको राष्ट्रीयता कहते हैं। यह साम्प्रदायिकता इस प्रकार अस्पष्ट (काम्प्लेक्स) है कि वह प्रायः लोगों की नजरों में नहीं आती और बड़े-बड़े लोगों को अपना आखेट (शिकार) बनाती है। परन्तु इसलिये यह कम भयानक नहीं।

हिन्दी-हिन्दुस्तानी

हमारे देश के सामने विशेष कर संविधान सभा के सामने राष्ट्र-भाषा का प्रश्न एक बड़े महत्व का है। हिन्दी साहित्य

सम्मेलन के सभापति श्रीमान् सेठ गोविन्द दासजी ने अपने मेरठ के भाषण में यह स्पष्ट कर दिया है कि हिन्दी की प्रतिद्वन्द्विता किसी भी प्रान्तीय भाषा से नहीं। प्रान्तीय भाषाएं अपने प्रान्तों में फलें-फूलें और और ऊंचे से ऊंचे विचार विनिमय का साधन बनें यह सब की इच्छा है। प्रश्न तो केवल केन्द्र की भाषा का है और मैं तो यह कहूंगा कि केन्द्र की भाषा और लिपि का प्रश्न प्रान्तों (और रियासतों) की भाषाओं और लिपियों के साथ प्रतिद्वन्द्विता की दृष्टि से तो देखा ही नहीं जा सकता बल्कि उनके साथ सहचारिता की दृष्टि से ही देखा जाना चाहिये। इस तरह भारत के सब प्रान्तों की भाषाओं के साथ सहचारिता की दृष्टि से जब हम देखते हैं तो इसमें कोई भी सन्देह नहीं रह जाता कि केन्द्र की भाषा हिन्दुस्तानी (जो उरदू का दूसरा नाम है) कदापि नहीं हो सकती, वह हिन्दी ही हो सकती है। शुद्ध राष्ट्रीयता की मांग है कि अरबी फारसी जन्य उरदू को छोड़ें और संस्कृत जन्य हिन्दी को केन्द्र के लिये स्वीकार करें। हिन्दुस्तानी अथवा उरदू के पक्षपातियों से मैं पूछना चाहता हूं कि दिशाओं के लिये उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम के प्रयोग से केन्द्र प्रान्तीय भाषाओं के (बंगाली, मराठी, गुजराती, तेलगू आदि भाषाओं के) निकटतम होगा, याकि शुमाल, जुनूब, मशरिक और मग़रिब के प्रयोग से। राइट एंगल ऐसासिलिस ट्राइंगल के लिये समकोण समद्विबाहु त्रिभुज कहने से या कि मुसल्लस मुसाबिऊ स्साकेन काय युज्ञाविया के कहने से। रांगफुल गेन के लिये केन्द्र इस्जित

साले वेजा कहें तो प्रान्तीय भाषाओं के निकट होगा या कि अन्याय लाभ कहें तो उत्तर स्पष्ट है। अब लिपि का प्रश्न लीजिये उरदू के पक्षपाती जिसमें कुछ हिन्दुस्तानी के समर्थक भी सम्मिलित हैं अरबी लिपि को भी केन्द्र के लिये लादना चाहते हैं। भारत की किस प्रान्तीय लिपि से अरबी लिपि की समता है? अरबी लिपि हमारी सभी लिपियों से सर्वथा भिन्न है न तो वर्णमाला और न लिपि में ही कुछ भी समता हमारी प्रान्तीय लिपियों से है। देवनागरी की वर्णमाला ठीक वही है जो बंगला, गुजराती आदि की है कोई भी अन्तर नहीं। लिपि में भी बहुत कुछ समानता है। मराठी की लिपि तो देवनागरी ही है? इस प्रकार भारत को सम्पूर्ण राष्ट्र की दृष्टि से देखने से हम एक ही परिणाम पर पहुंचते हैं और वह हिन्दी और देवनागरी हैं न कि उरदू और अरबी। फिर भी अचरज की बात तो यह है कि हिन्दी और देवनागरी कहनेवालों को कतिपय यह कहते हैं कि इसमें साम्प्रदायिकता है राष्ट्रीयता नहीं। मुझे तो इस साम्प्रदायिकता के आक्षेप से सर्वथा इन्कार है। इस सम्बन्ध में यदि कहीं साम्प्रदायिकता है तो वह हिन्दी और देवनागरी कहनेवालों पर नहीं बल्कि हिन्दुस्तानी और अरबी लिपि के पक्ष करनेवालों पर है। वह साम्प्रदायिकता चाहे (कम्प्लेक्स) छुपी हुई ही क्यों न हो?

परन्तु एक प्रश्न स्वाभाविक उठता है। हिन्दुस्तानी नाम की कोई भाषा कहीं है भी? मैंने उसे बहुत ढूंढ़ा कहीं नहीं मिली।

हमारे भारतवर्ष में लगभग २३ विश्वविद्यालय (युनिवरसिटियां) हैं जिनमें १४ प्रचलित देशी भाषाएं और १६ क्लासिकल और विदेशी भाषाएं मानी गई हैं। इन तीस भाषाओं में कहीं हिन्दुस्तानी का नाम भी नहीं। उनमें हिन्दी और उरदू दो पृथक विभिन्न भाषाएं तो पाई जाती हैं परन्तु हिन्दुस्तानी नाम की कोई भाषा नहीं। कालेजों से उतर कर नीचे स्कूलों में जाइये वहां भी हिन्दुस्तानी कहीं नहीं पाई जाती। (प्रायमरी स्कूलों में) प्रारम्भिक शालाओं में भी या तो हिन्दी है या उरदू। ऐंगल् को हिन्दी में कोण पढ़ाया जाता है या उरदू में जाविया, आइलैंड को द्वीप या तो जजीरा। सरल हिन्दुस्तानी की खोज में दिल्ली स्थित जमिया मिलिया की पुस्तकें मैंने छानी वहां की रेखागणित, भूगोल, अङ्कगणित आदि देखी तो वहां भी कहीं हिन्दुस्तानी नहीं मिली। शुद्ध और कठिन उरदू ही मिली। और कहीं नहीं तो (ए० आइ० सी० सी०) अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में हिन्दुस्तानी मिलनी थी। वहां भी वह नहीं थी। कांग्रेस के विधान की तीन प्रतियां हैं एक अङ्गरेजी में दूसरी हिन्दी में और तीसरी उरदू में। हिन्दीवाली हिन्दी थी और उर्दूवाली उर्दू की इनमें कोई समानता नहीं थी। तब मैं पूछता हूं कि बाजार को छोड़ कर हिन्दुस्तानी कहां है ? इसीलिये हमें सन्देह होता है कि हिन्दुस्तानी की पोशाक पहिना कर उरदू को लाने का यह सारा प्रयत्न है। जो लोग कहते हैं कि केवल नाम की बात है तो वे गलती करते हैं। केवल नाम की बात

नहीं असली तो तथ्य की बात है। ऐसा कोई मूर्ख नहीं कि जो केवल नाम के लिये विवाद करे यदि उसमें तथ्य की कोई बात नहीं तो केवल नाम के लिये क्यों आग्रह किया जाता है। सर्व प्रसिद्ध हिन्दी क्यों नहीं मान ली जाती? यदि कोई कहे कि हिन्दुस्तानी भाषा हम एक बनावेंगे तो मेरा कहना है कि जब वह बन जावे और समृद्ध हो जावे उसका कोई व्याकरण भी बन जावे और वह विश्वविद्यालयों के सदृश शिक्षा समाज द्वारा स्वीकृत हो जावे तब उसे संविधान सभा में या केन्द्रीय सरकार के लिये स्वीकृत करने का सोचिये, अभी नहीं। स्याराण्टों बनाने के प्रयत्न के समान यदि यह भी असफल हुई तो कैसा होगा। स्याराण्टों के असफल होने में तो किसी का बिगाड़ नहीं हुआ क्योंकि किसी राज्य ने उसे अपनी भाषा स्वीकार नहीं किया था। इसलिये सर्व विदित सर्व मान्य विद्यमान हिन्दी भाषा को एक मृगतृष्णा के लिये छोड़ना बुद्धिमत्ता न होगी।

इस सम्बन्ध में कुछ लोग महात्मा गान्धी की दुहाई देते हैं और अपनी कमजोर बात को किसी युक्ति से सिद्ध नहीं कर सकते तो महात्मा गान्धी का नाम लेकर सच्चाई का मुख बन्द करना चाहते हैं। यह ठीक नहीं। महात्मा गान्धी की कौन २ सी बातें किस २ परिधि तक ये लोग मानते हैं? महात्मा गान्धी में वह विशालता थी और वे इस प्रकार अलिप्त थे कि अपनी गलती स्वीकार करने में कभी नहीं हिचकते थे। और जिन अवस्थाओं में साधारण लोग अपनी गलती स्वीकार करने में

हिचक जाते महात्मा गान्धी डंके की चोट से स्वीकार करते। अतः उनके नाम को इस प्रकार घसीटना उचित नहीं। और फिर यह भी ठीक है कि जिन अर्थों में महात्मा गान्धी हिन्दुस्तानी के पोषक थे वे भिन्न हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि जो शब्द हमारी भाषाओं में आ गये हैं उनका निरर्थक बहिष्कार बिलकुल ही नहीं करना है चाहे वे किसी भी विदेशी भाषा से आये हुए हों। हिन्दी हिन्दुस्तानी (उरदू) का विषय इतना बड़ा है कि वह स्वयं एक स्वतन्त्र विचार का विषय हो सकता है। यहां इसको अधिक बढ़ाना ठीक नहीं। मुझे विश्वास है कि जब यह प्रश्न संविधान सभा के सामने आवेगा तो केन्द्र के लिये हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि ही स्वीकार की जावेगी।

भाषा के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए यह स्मरण दिलाना उचित ही होगा कि अफगानिस्तान की सरकार ने फारसी के स्थान मेंअपनी खुद की भाषा पश्तों की राज्य-कारबार की भाषा स्वीकार की है और पश्तों को वैज्ञानिक बनाने और उसको वर्त-मान आवश्यकताओं के लिये समृद्ध बनाने के निमित्त अपने काबुल के विश्वविद्यालय में संस्कृत को अनिवार्य विषय किया हुआ है। काबुल युनिवर्सिटी में तो संस्कृत को इसलिये अनि-वार्य किया जावे कि जिससे संस्कृत के आधार से पश्तों वैज्ञानिक की जा सके और वह समृद्ध बनाई जा सके और हम हिन्दी को समृद्ध बनाने के लिये संस्कृत की शरण लेते हैं तो कुछ लोग हम से रुष्ट होते हैं। कैसी विचित्र बात है ? इस सम्बन्ध में अफ-

गानिस्तान के राजदूत सरदार गुलाम मुहम्मदखाँ ने एक पत्र के उत्तर में लिखा है—'आपके क़ाबुल युनिवर्सिटी में संस्कृत के अध्यापन विषयक प्रश्न के लिये धन्यवाद। जैसा कि आपको ज्ञात है परसियन और पश्तों सीधी संस्कृत से निकली है और उनमें अब भी बहुत बड़ी संख्या में संस्कृत के शब्द विद्यमान हैं। युनिवर्सिटी में संस्कृत को अनिवार्य भाषा के रूप में पढ़ाने का उद्देश्य पश्तों को अधिक वैज्ञानिक बनाना और उसको अधिक उन्नत बनाना है। आशा है, संस्कृत इसमें बहुत ही सहायक सिद्ध होगी।"

भारत या इण्डिया

आर्य समाज के दृष्टिकोण से संविधान सभा के सामने एक और महत्व का प्रश्न है। और वह नाम का। इस हमारी भारत भूमि का नाम क्या हो जिसे अभी तक अंग्रेजी में इण्डिया कहते हैं उसका नाम क्या रहे ? प्रायः सभी देशों में देखा गया है कि स्वतन्त्रता के बाद विदेशी प्रभुता द्वारा दिये गये दासता के समय के नाम को बदल कर उन्हों ने अपने देशका नाम शुद्ध और ठीक रक्खा। तो क्या हम अपने देश के लिये इण्डिया को चिपकाये रक्खेंगे। मुझे विश्वास है कि हमारे देश का शुद्ध प्राचीन नाम-आर्यावर्त या भारत स्वीकार किया जावेगा। हमारी देशी रियासतों ने जो संघ बनाया उसमें उन सब ने अपना प्राचीन शुद्ध नाम रखने का यत्न किया।

श्री दीपकदत्त चौधरी बार-एट-ला (उपप्रधान)

श्री पं० रुद्रदेव शास्त्री विद्याभास्कर
(मन्त्री, स्वयंसेवक विभाग)
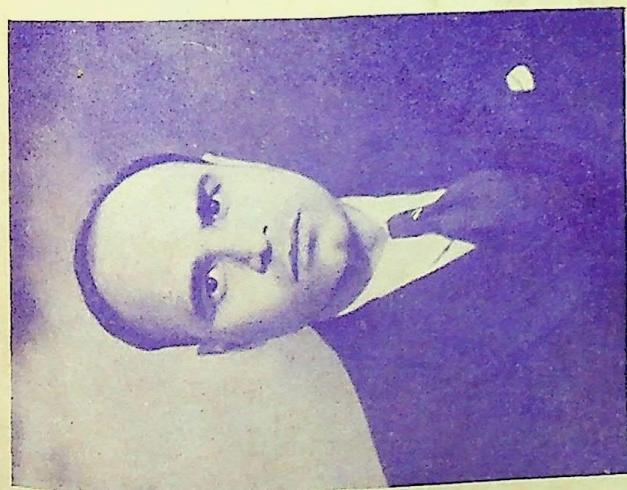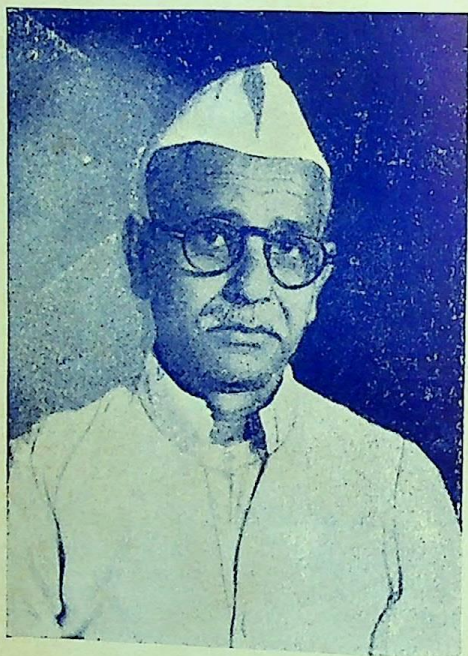
श्री नित्यानन्दजी

(जलूस मन्त्री)

काँग्रेस सरकार

१५ अगस्त १६४७ को स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् ही इस हमारे राष्ट्र पर जो कठिन समस्याएं आईं वे सबको विदित हैं। लाखों परिवारों का उजड़ कर आना और उनका तुरन्त प्रबन्ध करना कोई साधारण कार्य न था। फिर वस्तुओं का महंगा होना और उत्पादन के साधनों में गड़बड़ी रहना। ये सब समस्याएं हमारी कांग्रेस सरकार के सामने आईं। इस अचानक आई हुई इतनी बड़ी-बड़ी समस्याओं का जिस प्रकार हमारी सरकार ने हल करने का यत्न किना उसके लिये कांग्रेस सरकार को मुक्तकंठ से बधाई व धन्यवाद दिये बिना हम नहीं रह सकते। इस थोड़े से समय में कांग्रेस सरकार ने कई चिरस्मरणीय कार्य किये हैं परन्तु उन सब से प्रथम कोटि का जो कार्य हुआ है वह है सैकड़ों देशी रियासतों का भारत शासन के साथ सामञ्जस्य लाना। देशी रियासतों की समस्या इतनी कठिन समझी जाती थी कि कई लोग तो यह अनुमान करते रहे कि इस चट्टान पर भारत की राजनीति टकराये बिना न रहेगी। उन विचार को छोड़ भी दिया जावे तो भी यह कोई नहीं समझता था कि इस जटिल प्रश्न का हल इतनी सुन्दरता से इतना शीघ्र हो जावेगा। इस प्रश्न के हल होने से भारत की एकता और एकरूपता की नींव सुदृढ़ हो गई। हमारी कांग्रेस सरकार का एक अकेला यह काय़ ही इतने महत्व का है कि इतिहास इसे कभी न भूलेगा और भावी सन्तान सदा के लिये उपकृत रहेगी।

हैदराबाद रियासत का कटु अनुभव तो आर्य समाज को सबसे पहले हुआ। गैर मुसलिमों के प्रति जो व्यवहार वहां हो रहा था, इत्तेहादुल मुसलमीन के लोग जो विष उगलते रहे और रज़ाकारों द्वारा जो अत्याचार ढाया जाने लगा उससे यह स्पष्ट हो गया था कि उस प्रकार की स्थिति अधिक देर तक नहीं रह सकती। दूसरी रियासतों का मामला तो सुन्दरता और कुछ सरलता से हल हो गया था। परन्तु हैदराबाद की समस्या बहुत दिनों तक चलती ही गई। भारत की साधारण जनता के धैर्यका तो प्रायः अन्त हो चुका था। आखिर भारत सरकार का धैर्य भी जाता रहा और अन्त में वहां शान्ति स्थापन के लिये जो कार्यवाही भारत सरकार को हठात् करनी पड़ी वह सब को विदित है। उसका परिणाम भी बहुत अच्छा रहा और प्रत्येक को इस की प्रसन्नता है कि अब हैदराबाद रियासत में शान्ति की स्थापना हो गई।

इन सब कार्यों के लिये हमारी नेहरू सरकार और विशेषकर रियासत विभाग के मन्त्री सरदार बल्लभ भाई पटेल हमारे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं। भारत की वर्तमान अवस्था में यह प्रथम आवश्यक है कि उसे हर प्रकार पुष्ट किया जावे ताकि किसी बाहरी या भीतरी विरोधियों से कोई भय का स्थान न रहे। इसके लिये वर्तमान सरकार सतत यत्नशील है और सारी जनता का पूर्ण सहयोग का पात्र है। वर्तमान सरकार का हाथ सुदृढ़ करके ही हम भारत को सुदृढ़ बना सकते हैं। छोटी-मोटी वार्ता

की ओर नहीं देखना चाहिये। कोई ऐसी मानवी संस्था नहीं जिससे कुछ न कुछ त्रुटियां न हों। परन्तु हमें सम्पूर्ण चित्र की ओर ध्यान रखना चाहिये न कि उसके किसी छोटे भाग की ओर।

फिर भी कुछ लोग यह कहते सुने गये हैं कि कांग्रेस सरकार कुछ बातें ऐसी करती है जो उनके साथो की नहीं और जिसे वे राष्ट्र के लिये ठीक नहीं समझते ऐसे सज्जनों से मैं कहना चाहता हूं कि आइये, कांग्रेस को सहयोग दीजिये और यदि आपकी राय ठीक है और जनमत के अनुसार है तो भीतर से अपना प्रभाव डालिये। यही कार्य करने का सुलभ उपाय है। बाहर रह कर केवल समीक्षा करते रहने से कोई लाभ नहीं। उससे कुछ बनेगा नहीं। बिगड़ सकता है। जो सज्जन कांग्रेस की किसी नीति या उसके किसी कार्यक्रम से असन्तुष्ट हैं और उसे देश के लिये हानिकारक समझते हैं उनके सामने दो ही उपाय हैं। एक यह कि अगले साधारण (चुनाव) निर्वाचन से कांग्रेस को हरावें और अपने आप पर्याप्त संख्या में आवें। जनमत का राज्य है अतः जिधर जनमत होगी उसीके हाथ बागडोर होगी। परन्तु मेरी दृढ़ सम्मति है कि कांग्रेस को हराना शक्य नहीं। कांग्रेस के पीछे बलिदान और त्याग है। निःस्वार्थ सेवा की एक श्रृङ्खला है। जिसके कारण जनता की दृष्टि में कांग्रेस चढ़ी हुई है। जनता के लिये कांग्रेस का नाम एक जादू का काम करता है, और बहुत समय तक करता रहेगा। कांग्रेस की इतनी साख

संचित है कि कुछ भी हो तो भी बहुत दिनों तक काम देने वाली है। जिस प्रकार कि किसी अच्छी दूकान को साख काम देती है। अतः कांग्रेस को (आम चुनाव) साधारण निर्वाचन में हराना सम्भव नहीं। अब रहा दूसरा मार्ग कांग्रेस को अपनाना, उसे अपना सहयोग देना और अपनी बात कहना और मनवाना। कांग्रेस सबके लिये समान रूप से खुली है। किसी के लिये उसका द्वार बन्द नहीं। जो लोग वहाँ नहीं जाते और अपनी खिचड़ी अलग पकाते हैं उनका प्रभाव यदि कांग्रेस की नीति या कार्यक्रम में न पड़े तो इसमें कोई अचरज की बात नहीं। कल के मुसलिम लीग वाले भी यदि लीग को तिलांजलि देकर कांग्रेस में पर्याप्त संख्या में घुसें तो इसका अनिवाय परिणाम यह होगा कि उनकी मनोवृत्ति का कुछ न कुछ प्रभाव वहाँ पड़े और यदि ऐसा परिणाम होवे तो इसमें अचरज की क्या बात है? ठीक उपाय का अवलम्बन न करने और निरर्थक समीक्षा करने से क्या लाभ मेरी तो स्पष्ट राय है कि कांग्रेस ही हमारे देश में एक मात्र बलिष्ठ राजनैतिक संस्था है। जो सज्जन देश की सेवा राजनैतिक क्षेत्र में करना चाहते हैं या कि जो राजनैतिक मामलों में अपने अनुकूल कुछ परिणाम लाना चाहते हैं उन्हें चाहिये कि कांग्रेस में आवें, अपना सहयोग देवें और अपने विचार तथा मनोवृत्ति से उसे प्रभावित करें। कांग्रेस को हजारों की संख्या में हर क्षेत्र में सच्चे सेवकों की आवश्यकता है। जो निःस्वार्थ बुद्धि से सच्ची सेवा करेगा उसका प्रभाव हुए बिना रह नहीं सकता।

आर्य-समाज का कार्यक्रम

आर्य समाज की तो कोई राजनैतिक तृष्णा नहीं और वह निचली राजनैतिक धरातल में कुछ पारितोषिक भी नहीं चाहता। महर्षि के पदचिन्हों पर चलते हुए आर्य समाज तो भारतीय जनता की निरपेक्ष सेवा करना चाहता है। यही उसकी विशेषता और यही उसका भूषण है। कुछ लोग कहते हैं कि आर्य समाज को जो कुछ देना था वह दिया जा चुका। आर्य समाज के सभी कार्यक्रम को भारतीय जनता ने अपना लिया। अब आर्य समाज के पास देने को या करने को कुछ विशेष नहीं रह गया। जो सज्जन कहते हैं कि आर्य समाज की किसी समय बड़ी आवश्यकता थी उसने बड़ा काम किया परन्तु अब उसकी उपयोगिता शेष नहीं रही विशेषकर स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात्। मैं उनसे सहमत नहीं। मैं तो मानता हूं कि आर्य समाज की उपयोगिता अभी बहुत है। स्वराज्य के बाद तो उसका कार्य और भी बढ़ गया। ढंहाने के कार्य में जितने गुणों की आवश्यकता थी उससे भी अधिक सद्गुणों की आवश्यकता अब निर्माण के कार्य में होगा। जब अंग्रेजी राज्य को ढहाना था तब तो हमारी कुछ कमजोरियों से भी काम चल सकता था और उससे देश को उतनी हानि नहीं होती परन्तु अब तो देश हमारा हो गया है हरेक कमजोरी, हरेक त्रुटि अब हमारे ही सिर पर उतरेगी न कि अंग्रेजों के। जब मकान अंग्रेज़ों का था तब टूटे हुए छत से टपकता हुआ पानी अंग्रेजों को भिगाने का काम करता। परन्तु

जब मकान हमारा हो गया तब एक भी दरार से जो कुछ भी पानी टपकेगा वह हमें ही भिगोयेगा। इसलिये अब तो हमें अपने सारे दरार ठीक करने होंगे। एक भी कवेलू टूटा न रहे यह देखना होगा। इस पवित्र भवन में कोई भी दूषित कवेलू रह गई तो वह हम सबको भिगोवेगी। इसलिये परम आवश्यक है कि हममें से प्रत्येक अपने सारे दोषों से मुक्त होने का यत्न करे। यह सब सदाचार के बिना नहीं हो सकता। व्यक्तिगत सदाचार के अभाव में, भारत का निर्माण का कार्य दुस्साध्य है। यदि हम चोर बाजार से मुक्त होना चाहते हैं, या हम यदि मंहगाई हटाना चाहते हैं, या हम यदि अपने प्रबन्धकार्य में कुशलता लाना चाहते हैं तो हमें वैज्ञानिक सदाचार की ओर लक्ष्य देना होगा। वैयक्तिक सदाचार के बिना किसी प्रकार की भी उन्नति सम्भव नहीं।

वैयक्तिक सदाचार के निर्माण में आर्य समाज बहुत कुछ कर सकता है। उपदेश से नहीं आचरण से। ऋषि ने सब से अधिक बल सचाई सदाचार पर दिया है। वैयक्तिक और सामूहिक दोनों प्रकार के सदाचार पर। सामूहिक सदाचार का मूल मन्त्र आर्य समाज का नियम ९ और १० है।

"सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये"। सब काम धर्मानुसार करना चाहिये। यह आर्य समाज का अकाट्य नियम है। मनुष्य को सच्चा और सदाचारी बनने के लिये यह बाध्य करता है।

"प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सब की उन्नति से अपनी उन्नति समझना चाहिये।" समाज उन्नत हुए बिना कोई व्यक्ति उन्नत नहीं हो सकता। अतः देश की उन्नति के लिये प्रत्येक को कार्य करना चाहिये। और यह तब हो सकता है जब कि हम यह मानें कि सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये"।

आर्य समाज के समक्ष देश को पवित्र बनाने के लिये और भी कार्य है। छूआछूत के कलंक को मिटा देने की बात को यद्यपि राष्ट्र ने स्वीकार कर लिया है और उसे हमारे संविधान में भी अनुच्छेद ११ में स्थान मिल गया है तथापि अभीतक वह बौद्धिकक्षेत्र में ही सफल हुआ है यह कहना अतिशयोक्ति न होगी। क्रियात्मक रूप से उसे व्यवहार में लाने के लिये अभी भी बहुत शेष है और जिस सुधार को ऋषि दयानन्द ने आरम्भ किया उसमें अभी करने को बहुत शेष है। मुझे विश्वास है कि आर्य समाज के कार्य-क्रम का यह विशेष क्षेत्र है और आर्य समाज इस दिशा में बहुत उपयोगी कार्य कर सकता है। जन्म से जात पात के मानने का बन्धन भी ढीला होता जा रहा है परन्तु इस दिशा में भी इक्के-दुक्के को छोड़ कर प्रायः विस्तृत क्षेत्र खाली पड़ा हुआ है। आर्य विवाह आर्य नियम (आर्य मैरेज ऐक्ट) के बन जाने के पश्चात् अन्तर्जातीय विवाह में जो वैध रुकावट थी वह तो अब दूर हो चुकी है। और उस आर्यनियम का आश्रय बहुत लोग

लेने भी लगे हैं। फिर भी इस ओर हमें प्रगतिशील होना चाहिये। इस प्रकार देखा जावे तो स्पष्ट होगा कि यद्यपि आर्य समाज के सामाजिक कार्य-क्रम को देश ने बौद्धिक रूपसे सर्वथा स्वीकार कर लिया है फिर भी क्रियात्मक रूप से उसे व्यवहार में लाने के लिये बहुत शेष है। शुद्धि का कार्य भी विशेष महत्व रखता है। अभी जब कि भारत के खंडित होने के भयंकर परिणाम स्वरूप लाखों नहीं तो सहस्त्रों नर-नारियों को अपनी जान बचाने के लिये धर्म परिवर्तन करना पड़ा तो उनको पुनः शुद्ध करने का पवित्र कार्य आर्य समाज के विशेष उत्तर-दायित्व का है। इस ओर आर्य समाज को संगठित कार्य करना चाहिये। ऐसे लोगों के सिवाय भी जो लोग स्वतन्त्रता पूर्वक वैदिक धर्म को स्वीकार करना चाहें उनके लिये न केवल धर्म का अपितु समाज का भी द्वार पूरा खुला रहना चाहिये। उनकी शुद्धि तो प्रायः हो जाती है परन्तु जाति और समाज उनको स्वीकार नहीं करता। उनसे रोटी-बेटी का व्यवहार नहीं होता इसका परिणाम यह होता है कि जो लोग वैदिक धर्म की सिद्धान्तों की पवित्रता से आकर्षित होकर अपना धर्म परिवर्तन कर करके शुद्ध होते हैं वे समाज की मूर्खता के कारण समाज में हज़म नहीं होते समाज में घुल मिल-कर विलीन नहीं होते इसलिये उन्हें सामाजिक रूप से अपना अस्तित्व पृथक बनाये रखना पड़ता है। इसका परिणाम यह होता है कि कुछ दिनों के पश्चात् तंग होकर उन्हें फिर भी अपने पुराने समाज का आश्रय लेना होता है और इस कारण अपने

पुराने धर्म का भी। इस ओर आर्य समाज को सुसंगठित कार्य करना चाहिये और इसके लिये प्रयत्नशील होना चाहिये कि किसी शुद्ध हुए व्यक्ति को हमारे समाज के दुराग्रह और मूर्खता के कारण तंग होकर धर्म छोड़ना न पड़े बल्कि वह घुलमिलकर एक हो जावे और उनके साथ व्यवहार में कोई अन्तर न होने पावे।

एक और प्रश्न जो महत्व का है, वह शरणार्थियों का है। इनके लिये शरणार्थी शब्द का प्रयोग ठीक नहीं। एक दृष्टि से तो इनके बलिदान ने हमारे लिये हमारी स्वतन्त्रता खरीदी है। इनको बसाने का प्रश्न भारत की जनता के लिये एक आवश्यक कर्त्तव्य पालन का प्रश्न है। भारतीय तथा प्रान्तीय सरकारोंने अपनी पूरी शक्ति लगाई। परन्तु यह प्रश्न इतना बड़ा है कि जनता के पूरे सहयोग के बिना कोई भी सरकार सफल नहीं हो सकती। सबों को चाहिये कि इस में अपना हाथ बटावें और जिससे जिस प्रकार का सहयोग देना सम्भव हो, देवें। जिन हमारे भाई और बहिनों को अपना घरबार छोड़ आना पड़ा और अतुल कठिनाइयां उठानी पड़ी उनके लिये हम सब हृदय से दुःखी हैं। इसमें आर्य भाइयों की भी उसी प्रकार हानि हुई है जैसे कि दूसरों की। पश्चिमी पाकिस्तान में आर्य समाज की अनेकानेक संस्थाएं थीं. धार्मिक, सामाजिक और शिक्षा सम्बन्धी इन संस्थाओं की अपनी सम्पत्ति भी बहुत थी। आर्य समाज की इन संस्थाओं की आर्थिक हानिका अनुमान लगाना मेरे लिये

कठिन है फिर भी समाज में मेरा विश्वास है कि आर्य समाज की सब संस्थाओं की आर्थिक हानि जोड़ी जावे तो वह करोड़ों रुपयों की गिनती को पार करके सम्भवतः अरबों की गिनती तक पहुंचे। इसके लिये पाकिस्तान से मावजा पाने का कार्य केन्द्रीय सरकार के द्वारा ही हो सकता है। वैयक्तिक प्रयत्न कोई काम नहीं देगा। अच्छा हो यदि यह सम्मेलन एक कमेटी बनावे, जो इस विषय पर हर पहलू से विचार करे और उचित मार्ग सुझावे जिसके अनुसार योग्य कार्य किया जावे ताकि उसका कुछ परिणाम हो।

हिन्दू कोड बिल

हिन्दू कोड बिल के सम्बन्ध में हिन्दू जनता में पर्याप्त चर्चा है। यद्यपि मैंने उसकी धाराओं का अध्ययन नहीं किया है तथापि मोटी-मोटी बातें जो समाचारपत्र में आयी हैं उनको सब ने पढ़ा है। एक बात स्पष्ट है कि वह बिल पर्याप्त विवादास्पद है और वर्तमान हिन्दू ला में मौलिक परिवर्तन करता है। इनमें भी कोई सन्देह नहीं कि हिन्दू कोड बिल के कई मुख्य प्रावधानों (प्रोवजिन) पर हिन्दू जनता का प्रर्याप्त विरोध है और उन्हें वह अपने सामाजिक संगठन के लिये घातक समझती है। इन ववादास्पद प्रावधानों के विषय में उस प्रकार जनमत प्राप्त नहीं की गई है कि यह कहा जा सके कि उसके कानून बनने में हिन्दू जनताकी जिसपर वह लागू होगा पर्याप्त सहमत है। कुछ लोगों की तो यह धारणा है कि हिन्दू जनता स्त्री और पुरुष दोनों बहुत अधिक

संख्या में इसके विरुद्ध हैं। हमारी राज्य प्रणाली असाम्प्रदायिक है (भारत सेक्रूलर स्टेट है) और अभी आर्य संविधान सभा ने यह निश्चय किया है कि भारत में एक त्रिध-व्यवहार संहिता (युनीफार्म सिविल कोर्ड) होनी चाहिये। अतः हिन्दू कोड बिल की (मेरिट) औचित्य अथवा अनौचित्य की बारीकी से जांच पड़ताल किये बिना ही, इन सब बातों को देखते हुए यह उचित प्रतीत होता है कि वर्तमान संविधान सभा हिन्दू कोड बिल का पारित करना स्थगित करे।

आर्य समाज का संगठन

आर्य समाज की विशेषता है कि ऋषि ने इसे एक संघटित संस्था बनाया। स्थानीय आर्य समाजें, प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाएं और सार्वदेशिक सभा इस संगठन के अंग हैं। इनके आपस का अन्यान्य सम्बन्ध सुदृढ़ होना चाहिये तभी आर्य समाज का संगठन सुदृढ़ बना रहेगा। नहीं तो इसमें कमजोरी आ सकती है। हम सब को चाहिये कि सार्वदेशिक सभा को और भी सुदृढ़ बनावें ताकि उसका प्रभाव और भी अधिक बढ़े। प्रत्येक प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा इसमें सम्मिलित रहें यह परमावश्यक है। सम्पूर्ण आर्य समाज की यह शिरोमणि संस्था है, इसका मुझे सदा खेद रहा है कि आर्य समाज का एक प्रमुख और प्रभावशाली भाग इसमें नियमानुकूल सम्मिलित नहीं। यह ठीक है कि आर्य समाज के सामने जब कोई बड़ी समस्या आती है तब कोई भेद नहीं रह जाता और सब एक हो जाते हैं। परन्तु

यह पर्याप्त नहीं। आर्य समाज का सम्पूर्ण संघटन एक सूत्र में बंधा रहना चाहिये और अब तो पाकिस्तान बनने के कारण पंजाब, सिन्ध और बलोचिस्तान में आर्य समाज को जो मुसीबत भोगनी पड़ी वह तो इसके लिये पर्याप्त होना चाहिये कि आर्य समाज की सब संस्थाएं सार्वदेशिक सभा में गुंथ जावें और एक सूत्रता स्थापित करें। मुझे विश्वास है कि आर्य समाज के नेता इस ओर विशेष ध्यान देंगे।

आर्य कुमार सभा

युवकों में आर्य समाज के प्रचार का कार्य आर्य कुमार सभा कर रही है। यह एक आवश्यक कार्य है। आर्य समाज की वृद्धि के लिये यह आवश्यक है कि भारत का युवक-मण्डल इस ओर आकर्षित हो। आर्य कुमार सभा ने इस दिशा में प्रसंश-नीय कार्य किया है परन्तु कार्य की गुरुता को देखते हुए वह पर्याप्त नहीं। आर्य कुमार सभा को पुष्ट करने का उपाय सोचना चाहिये ताकि उसकी उपयोगिता और भी बढ़ जावे।

अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक संपर्क

एक और महत्त्व का कार्य है जिसकी ओर हमें विचार करना चाहिये भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् यह विषय और भी महत्त्व का हो गया है। सांस्कृतिक क्षेत्रमें अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क स्थापित करने का कार्य होना चाहिये। इसमें किसी का विरोध नहीं हो सकता। एशिया खंड के अधिक भागों में तो भारत का जो

सांस्कृतिक सम्बन्ध पुरातन काल में रहा वह अब पुनः जीवित किया जा सकता है। अभी भी थाईलैंड की भाषा में संस्कृतके शब्द बहुतायत से पाए जाते हैं। पश्चिम की ओर जाइए तो (अभी मुझे मालूम हुआ कि) अफगानिस्तान की पश्तू भाषा में संस्कृत के बहुत शब्द विद्यमान हैं। अपने सांस्कृतिक सम्पर्क का आधार यदि हम संस्कृत को स्वीकार करें तो उससे मार्ग सहल हो सकता है।

आपका जितना समय मैं लेना चाहता था उससे अधिक लिया गया इसके लिये आपसे क्षमा चाहता हूं।

* ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः *

अखिल भारतीय पष्ठ आर्य महासम्मेलनके स्वागताध्यक्ष पं० मिहिरचन्द्रजी धीमानका भाषण

ओ३म्

मंगल कामना

अभि वर्धतां पयसाभि राष्ट्रेन वर्धताम् ।
रय्या सहस्रवर्चसेमौ स्तामनुपक्षितौ ॥
अ० ६।७८।२॥

यह पति-पत्नी (पयसा) दूध पीकर (अभिवर्धताम) बढ़ें । (राष्ट्रेण) राष्ट्रके साथ (अभिवर्धताम (बढ़ें । (सहस्त्रवर्चसा रय्या) हजारों तेजों से युक्त धनके साथ (इमौ) ये दोनों पति और पत्नी (अनुपक्षितौ स्तां) भरपूर रहें ।

माननीय बाबू धनश्याम सिहजी गुप्त, प्रतिनिधि बन्धुओ, देवियो और भद्र पुरुपो !

स्वागत समिति के अध्यक्ष के नाते मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि अखिल भारतवर्षीय आर्य महासम्मेलन के पष्ठ अधिवेशन के शुभ अवसर पर इस प्राचीन और ऐतिहासिक कलकत्ता नगरी में मैं आपका स्वागत करूं । कलकत्ता अभी

कल की बात है कि ब्रिटिश सरकार का द्वितोय महानगर रह चुका है। जिस प्रांत में आज आप का आगमन हुआ है, उस प्रांत का देश में राष्ट्रीय भावनाएं भरने में बड़ा भारी हाथ है। स्वदेशी लहर को चलाने का सुअवसर सब प्रथम इसी प्रान्त को प्राप्त हुआ था। अमर शहीद खुदीराम देशके लिये फांसीपर हंसते-हंसते चढ़नेवाले वीरको इसी प्रांत ने उत्पन्न किया था। श्रीमद्‌भगवद् गीताको अपने हाथ में लेकर क्रांति की अग्नि प्रज्वलित करनेवाले वीरों की टोली सर्वप्रथम यहां ही तैयार हुई थी। वन्देमातरम् जिसकी ध्वनिने समस्त देश में राष्ट्रीय भावनाओं को भर दिया, उस राष्ट्रीय गीत के निर्माता स्वर्गीय बङ्किम चट्टोपाध्याय इसी देश की उपज थे। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर, देशबन्धु चित्तरंजनदास, महायोगी अरविन्द घोष जो आज पाण्डीचेरी में अपनी तपस्या और साधनाओं से अपने दर्शन और अपनी लेखनी से विश्वको चकित किये हुए हैं, वे इसी प्रांत के सर्वेसर्वा विभूति हैं। परमयोगी स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, श्रीकेशव-चन्द्र सेन, श्री राजा राममोहन रायको भुलाया नहीं जा सकता। आज़ जो जयहिन्द सिंहनाद राष्ट्रकी विजय का प्रतीक बन गया है; वह भी इसी प्रांत की देन है, जो नेताजी सुभाषचन्द्रबोस की सेवाओं का फल है। मैं समझता हूं कि इतना ही लिख देना पर्याप्त होगा कि देश की स्वतन्त्रता प्राप्त कराने में बंगाल प्रांतने बड़ी सेवाएं की हैं। बङ्गप्रांत के इतिहास में यह सर्व प्रथम सुअवसर है, जो इस प्रकार का महा आर्य सम्मेलन यहां हो रहा

है। सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा के फैसले के अनुसार यह निश्चय हुआ है कि प्रति वर्ष इस प्रकार के अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन भारत के भिन्न-भिन्न प्रांतों में हों, जिससे आर्य जनता द्रुतगति से अपने ध्येय की पूर्ति कर सके और नित्यप्रति बदलनेवाली परिस्थितियों का सिंहावलोकन कर आगामी वर्ष के लिये भावी कार्यक्रम निर्धारित करके जनता को सन्मार्ग पर लानेमें समर्थ हो सके। सार्वदेशिक सभा के इन विचारों को सर्वप्रथम कार्यान्वित करने का सौभाग्य बङ्ग प्रांत को ही प्राप्त हुआ है, इसलिये आज हम प्रसन्न हैं। इसी लिये ही आज मुझे इस कलकत्ता महानगर में आप का हृदय से अभिनन्दन करते हुए बड़ा आनन्द हो रहा है। आप जैसे देशके महान सपूत कर्मी को इस महान कर्मक्षेत्र में स्वागत करते आज मुझे क्यों न हर्ष हो ?

प्रबन्ध सम्बन्धी अपनी त्रुटियों को हम जानते हैं और हमें खेद है कि हार्दिक इच्छा होते हुए भी कलकत्ते की कुछ परिस्थितियों और अनिश्चित अवस्था के कारण हम आप जैसे महान व्यक्ति का यथोचित भव्य स्वागत नहीं कर सके; अतएव आप हमारी इन त्रुटियों को ध्यान में न लायेंगे।

आज इस प्रकार आर्य नेताओं, आर्यजगत के उच्चकोटि के प्रकाण्ड विद्वानों, योगी, साधु, संन्यासियों के समारोह को देखकर हृदय गद्गद हो रहा है, मैं सब का हृदय से अभिनन्दन करता हूं।

श्री कृष्णलाल खट्टर बी० ए०, बी० टी०,
प्रधानाध्यापक—आर्य विद्यालय कलकत्ता (पंडाल मंत्री)
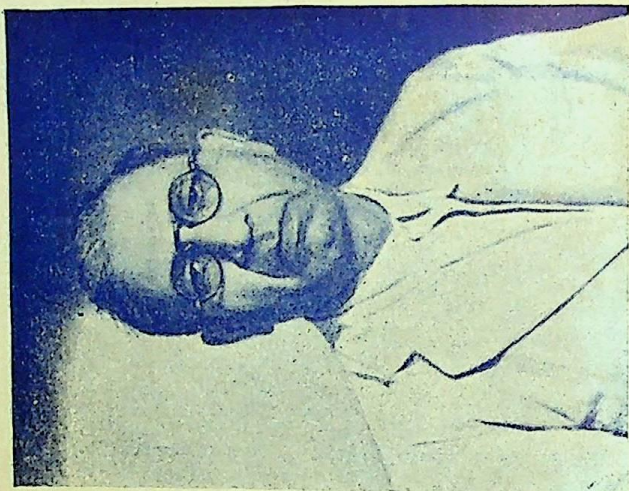
श्री श्रीराम खट्टर (यातायात मन्त्री)
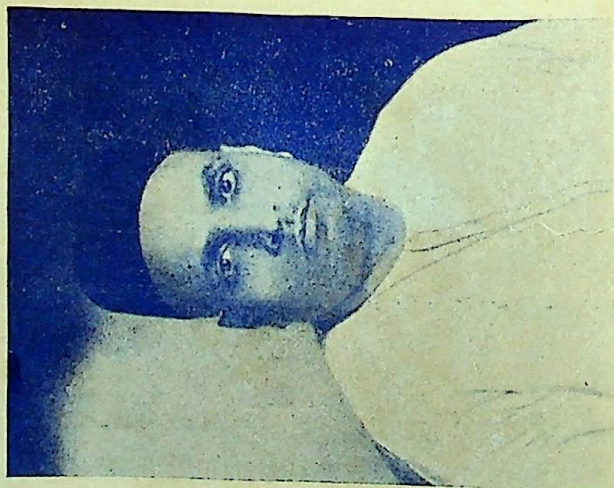
श्री जाइंया शाहजी (आतिथ्य मन्त्री)

श्री एन० डी० मोहन (स्वास्थ्य मन्त्री)

हमें इस बातकी बड़ी प्रसन्नता है कि आज हमने उस व्यक्तिको प्रधान के रूपमें पाया जिनकी सेवायें देश और आर्य जगत भूल नहीं सकता। आपकी तपस्या और साधना आपके कार्यक्रम और संलग्नता से आर्य समाज और राष्ट्र उन्नत मस्तक हैं अपने झंडे को ऊंचा रखे हुए हैं। Arya Marriage Validation Act व हैदराबाद सत्याग्रह पर आप की सेवा को आर्य समाज कैसे भूल सकता है। आज आपको इस सम्मेलन के प्रधान पद के रूपमें पाकर आर्यजगत अपने को धन्य अनुभव कर रहा है। आज जब कि देश गुलामी से मुक्त हो चुका है स्वाधीनता देवी का देश में आगमन हुआ है, ऐसे समय में यानी इस बदली हुई अवस्था में आर्य समाज का स्थान क्या होना चाहिये? आर्य समाज स्वतन्त्रता प्राप्ति पर अपना क्या प्रोग्राम बनाये? इन सब कठिन बातों का स्पष्टीकरण कौन करे? इस समय समाज रूपी नौकाका कौन कर्णधार बनकर आगे ले जाय? हमें पूरी आशा है कि हमारे योग्य प्रधान हमें अवश्य पार लगायेंगे। भारत विभाजन से देश की जो क्षति हुई विजयी आर्य समाज को जो हानि उठानी पड़ी, नारी जाति पर जो अत्याचार हुए हैं उन सब का प्रतिकार करने के लिये हमें योग्य प्रधान मिला है। भारत के विभाजन के विरुद्ध देश की जो भावनाएं थीं वे सब मिट्टी में मिल गईं। हमने कहा था कि "श्मशान भले ही बन जाय वन सकता है पर पाकिस्तान नहीं।" ये सब सिंहनाद आकाश में गूंज कर ही रह गये। भारत का विभाजन हुआ ही, देश की अखण्डता के

६

दावे हमारे सब झूठे साबित हुए। पाकिस्तान के निर्माण की रक्तरंजित घटनाने १३, १४ सदी की बर्बरता को भी मात कर दिया। लाखों घर बेघर हो गये, करोड़ों की सम्पत्ति लूट ली गई। हजारों देवियों के सुहाग छिन गये। हजारों नवयुवतियों, किशोर बच्चियों को नग्न कर अमानुषिक अत्याचारों से पीड़ित कर मां-बाप के सामने से छीन कर ले गये। जिनका आज तक कोई पता नहीं चल सका। हमारी गैरत पर ऐसी ठेस लगी है कि आज हमारे मस्तक नत हैं। क्या कहें क्या यह भारत के विभाजन की बड़ी दुखद कहानी नहीं है? सदियों तक भुलाई नहीं जा सकेगी। इतनी नहीं, देश के विभाजन से ऐसी साम्प्रदायिकता की आग प्रज्वलित हुई कि देश चारों ओर से जल उठा। साम्प्रदायिकता के विषने देश को पागल बना दिया जिसका यह परिणाम निकला कि विश्व की सर्व श्रेष्ठ विभूति हमने अपने हाथों खत्म कर दी। सदाके लिये हिन्दू जातिपर कलंक कालिमा पोत दी गयी। जिस महात्मा को हमने देश के शत्रु चर्चिल सरकार के जेल में नहीं मरने दिया उस महात्मा को हमने अपने हाथों खत्म कर दिया। महात्मा गांधी १२५ वर्ष जीना चाहते थे और जीकर रामराज्य निर्माण करना चाहते थे हमने उनकी दोनों आशायें पूरी नहीं होने दी। भारत के विभाजन से आर्य समाज की जो क्षति हुई वह कब पूरी होगी, नहीं कहा जा सकता। इस भौतिक जगत में जो कुछ भी महान हो सकता है वह सब कुछ हाथ से जाता रहा। डी० ए० बी० कालेज, गुरुकुल, आश्रम,

करोड़ों की सम्पत्ति जाती रही। ऐसे ही सिख दुःखी हैं, ऐसे ही सिंधी भाई रो रहे हैं। स्वतन्त्रता देवी की प्राप्ति के लिये यह देश की अन्तिम आहुति बड़ी हृदय विदारक आहुति है जिसकी दास्तां सुनकर आनेवाली सन्तानें कांप उठा करेंगी।

यह सब होते हुए भी एक बात बड़े जोरसे कही जा सकती है कि जो भारत विभाजन के अनन्तर बचा है वह आज पूरा स्वतन्त्र है। आज दो सौ वर्षों का अंग्रेजों की गुलामी का चोला हमने उतार कर फेंक दिया है। आज राष्ट्र के निर्माण का कार्य बड़े ज़ोरों से आरम्भ हो चुका है। हैदराबाद, जूनागढ़ को हमने अपनी शक्ति से अत्याचारों से बचा लिया है रजाकारों के अत्याचारों को हमने खत्म कर दिया है। काश्मीर को भी काफी सुरक्षित कर लिया है हमें आशा है कि काश्मीर शीघ्र ही सम्पूर्ण सुरक्षित हो जायगा।

अब यह प्रश्न है कि इस बदली हुई हालत में आर्य समाज का स्थान कहां है? आर्य समाज राष्ट्र के निर्माण में क्या सहयोग दे सकता है। आर्य समाज जिस मार्ग का पथिक बना हुआ है क्या अपनी मञ्जिल पर पहुंच चुका है कि नहीं? हम आर्य समाजियों ने व्रत लिया हुआ था एक ऋषिका ध्येय हमारे सामने है यह है विश्वको आर्य (श्रेष्ठ) बनाने का। इस कार्य में आर्य समाजियों ने कहां तक सफलता लाभ की है? हमें अपनी त्रुटियों को सामने रखते हुए यह स्वीकार करना होगा कि विश्वको आर्य क्या बनाया अभी तक हमने अपने देशको आर्य नहीं बना

पाया। स्वामी जीके छठे समुल्लास को जो देश की सही राज-नीति की परिचायिका थी हमने अपने हाथों बन्द कर रखा है। गुलामी के समय से ही हमारे कर्णधारों ने इस अध्याय को तिलांजलि दे रखी है। क्या इस समय हम इस अध्याय को कार्य में ला सकते हैं ? यदि ला सकते हैं तो कैसे ला सकते हैं ? पहले बहुत लोग कहते थे कि जब देश गुलाम हो तो वह क्या राजार्य्य सभा बनाये। यह तो स्वतन्त्र होने पर ही सम्भव है। अब हम एक दम स्वतन्त्र हो चुके हैं। क्या इस समय राजार्य्य सभा बनायी जा सकती है ? यदि बनाई जा सकती है तो हमें देश में ऐसा प्रबल आन्दोलन करना होगा जिससे ज़ाति-पांति के भेद भाव को छोड़ कर जनता का सहयोग प्राप्त कर देश को आर्य बना सकें। यानी देश में आर्य विचारों की सरकार का निर्माण कर सकें तो इसके अनन्तर हम विश्व को आर्य बनाने में कूद सकते हैं तभी ऋषि की आत्मा को शाँति मिलेगी। कोई समय था जब विश्वमें आर्यों का चक्रवर्ती राज्य था। इस समय हम किन-किन साधनों का प्रयोग करें जिससे विश्व में आर्यों का चक्रवर्ती राज्य स्थापित कर सकें उस पर हमें विचार करना है। बहुत लोग कहते हैं कि आर्य समाज एक साम्प्रदायिकता फैलाने वाली संस्था है इसमें कहां तक तथ्य है ? इसका हमें विचार करना होगा, स्वामी जी ने इस संस्था को विश्व का कल्याण करने के लिये बनाया था। कहीं हम अपने मार्ग से विमूढ़ तो नहीं हो गये ? यदि नहीं तो हमें यह मानना चाहिये कि जनता

ऐसा सन्देह क्यों करती है इन सब पहलुओं पर विचार कर हमें अपने भावी कार्यक्रम को निर्धारित करना होगा।

हम अपनी आंखों के सामने देखते हैं कि वर्मा बुद्धिस्ट स्टेट (Buddhist State) हो रही है। लङ्का भी बुद्धिस्ट स्टेट हो रही है पाकिस्तान जिसका भारत से अंग विच्छेद हुआ है वह Islamic State होने जा रही है और Indian Union देखते हैं Secular State होने जा रही है। Secular State के अर्थ समझ कर जनता घबड़ा जाती है क्योंकि उसका कहना है कि जब बाकी सब स्टेटें अपने धर्म की भित्ति पर गठित हो रही है। अब जब कि भारत का विभाजन Two Nation Theory याने हिन्दू मुस्लिमको ले कर हो ही गया है। मुसलमानों को जो भाग मिला वह Islamic State हो गयी है, जो हिन्दुओं को भाग मिला वह स्वभावतः हिन्दू स्टेट होनी चाहिये। लेकिन उसकी जगह हमारी कांग्रेस Secular State तैयार करने जा रही है इसीसे अबोध जनता घबड़ा उठती है लोगों का ख्याल है कि Secular State का मतलब धर्म रहित स्टेट है। ऐसा नहीं है। कोई स्टेट जो धर्मके पवित्र नींव पर तैयार की जाती है वह देर तक ठहर सकती। अतएव धर्म के बिना कोई स्टेट नहीं चल सकती। Secular State का अभिप्राय खुदाई दुनिया से निकल कर इहलौकिक सुख और शांति की उपलब्धि करना है यानी मानव धर्म का प्रसार करना ही Secular State का अभिप्राय है। हमारा देश धर्मप्रधान

देश है। हमने धर्मके नाम पर जो अत्याचार किया और मानवता पर कुठाराघात किया उसकी दास्तां बड़ी दुखभरी है। हमने ईश्वर के नाम पर मानवता का जनाजा निकाल दिया अतएव हमें सर्वप्रथम स्वर्ग को छोड़कर मानव धर्मको प्रतिष्ठित करना है और इस भारत भूमि को स्वर्ग भूमि में परिणत करना है जैसे कि वेदों के सुनहरे काल में थी। इसलिये मानव धर्म की प्रतिष्ठा करने के लिये Secular State ही एक उपाय है। इसलिये हमको इसका समर्थन करना चाहिये। हमारे ऋषिने सत्यार्थ प्रकाश के अन्त में इसी धर्म को फैलाने का इसी प्रकार के Secular Doctrine फैलाने का संकेत किया।

स्वामी दयानन्द जी अपने सत्यार्थ प्रकाश के अन्त में स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश अध्याय में लिखते हैं :—

"सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् साम्राज्य सार्वजनिक धर्म जिसको सदासे सब मानते आये, मानते हैं और मानेंगे भी इसी लिये उसको सनातन नित्यधर्म कहते हैं कि जिसका विरोधी कोई भी न हो सके, यदि अविद्यायुक्त जन अथवा किसी मत वालेके भ्रमाये हुए जन जिसको अन्यथा जाने या माने उसका स्वीकार कोई भी बुद्धिमान नहीं करते, किन्तु जिसको आप्त अर्थात् सत्यमानी, सत्यवादी, सत्यकारी परोपकारक पक्षपातरहित विद्वान मानते हैं यही सबको मन्तव्य और जिसको नहीं मानते वह अमन्तव्य होने से प्रमाण के योग्य नहीं होता। अब जो वेदादि सत्य-शास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनिमुनि पर्यन्तों के माने हुए

ईश्वरादि पदार्थ हैं जिनको मैं भी मानता हूं सब सज्जन महाशयों के सामने प्रकाशित करता हूं। मैं अपना मन्तव्य उसीको जानता हूं कि जो तीन कालमें सब को एकसा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना या मतमतांतर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना छोड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्य्यावर्त्त में प्रचलित मतों में से किसी एक मतका आग्रही होता किन्तु जो २ आर्य्यावर्त्त व अन्य देशों में अधर्मयुक्त चाल चलन है उनका स्वीकार और जो धर्मयुक्त बातें हैं उनका त्याग नहीं करता न करना चाहता हूं, क्योंकि ऐसा करना मनुष्य धर्म से बहिः है। मनुष्य उसीको कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख दुःख और हानि-लाभ को समझे, अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे, इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे महा अनाथ निर्बल और गुण रहित क्यों न हों उनकी रक्षा, उन्नति प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ महाबलवान और गुणवान् भी हों तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे अर्थात् जहांतक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बलकी हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे, इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें परन्तु इस मनुष्यपन रूप धर्म से पृथक कभी न होवे।"

आगे स्वामी जी लिखते हैं :—

"ये संक्षेप से स्वसिद्धांत दिखला दिये हैं इनकी विशेष व्याख्या इसी 'सत्यार्थ प्रकाश' के प्रकरण में है तथा ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका आदि ग्रन्थों में भी लिखो है अर्थात् जो २ बात सबके सामने माननीय है उनको मानना अर्थात् जैसे सत्य बोलना सबके सामने अच्छा और मिथ्या बोलना बुरा है ऐसे सिद्धांतों को स्वीकार करता हूं और जो मतमतांतर के परस्पर विरुद्ध झगड़े हैं उनको मैं पसन्द नहीं करता क्योंकि इन्हीं मत-वालोंने अपने मतों का प्रचार कर मनुष्यों को फंसा के परस्पर शत्रु बना दिये हैं। इस बात को काट सर्व सत्यका प्रचार कर सब को एकमत में करा द्वेष छुड़ा परस्पर में दृढ़ प्रीतियुक्त कराके सब से सब को सुख-लाभ पहुंचाने के लिये मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है। सर्वशक्तिमान परमात्मा की कृपा, सहाय और आप्तजनों की सहानुभूति से 'यह सिद्धांत सर्वत्र भूगोल में शीघ्र प्रवृत्त हो जावे' जिससे सब लोग सहज से धर्मार्थ काम मोक्षकी सिद्धि करके सदा उन्नत और आनन्दित होते रहें यही मेरा मुख्य प्रयोजन है।"

अतएव इससे पता चलता है कि मानव धर्म को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिये ही सत्यार्थ प्रकाश को प्रकाशित किया था, मानव धर्मको मतमतांतरों के झगड़े से छुटकारा दिला कर सुखी और उन्नत बनाना ही स्वामीजी को अभीष्ट था। कांग्रेस का यह प्रयास Secular State निर्माण करने का ठीक ही प्रतीत होता

है। भारतवर्ष को मत मतांतरों ने व्यस्त किया है अतएव भारत को इनसे मुक्त कर मानवधर्म का प्रसार करने के लिये Secular State ही सुन्दर साधन है। हम आर्यों को इसलिये स्वागत करना चाहिये। यह Secular State के विचार की सरकार हमें पहले मनुष्य बनना सिखायेगी। भारतवासी मनुष्य बनने के पहले धर्म की दुहाई देकर देवता बनना चाहते हैं यह कैसे हो सकता है। पहले हमें मानव धर्ममें अपने आपको ओत-प्रोत करना होगा तभी हम देवता बन सकेंगे। इसलिये मानव बनने के लिये Secular State ही सुन्दर साधन है। Secular State में सब से बड़ा धर्म जो होगा, वह मानवता का सुन्दरसे सुन्दरतम विकास। इसमें यह बात समझ लेनी चाहिये कि Secular State धर्म रहित स्टेट नहीं।

सुख की अभिलाषा

विश्व के सभी प्राणी सुख चाहते हैं क्या जीवजन्तु क्या पशु पक्षी; सभी सुख और शान्ति के अभिलाषी दिखाई देते हैं। अब यह प्रश्न होता है कि वह मिलता कैसे है इसका सुन्दर उत्तर कौटिल्य अर्थ शास्त्र के प्रणेता महर्षि चाणक्यने अपने सूत्रों में दे दिया है। वे लिखते हैं सुखस्य मूलं धर्मः ॥१॥ धर्मस्य मूलमर्थः ॥२॥ अर्थस्य मूलं राज्यम् ॥३॥ राज्यस्य मूलमिन्द्रियजयः ॥४॥ अर्थात् सुख का मूल (कारण) धर्म है ॥१॥ धर्मका मूल अर्थ है ॥२॥ अर्थ का मूल राज्य है ॥३॥ इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना ही राज्य का मूल है (तात्पर्य यह है कि विना इन्द्रियों

पर विजय किये हुए कोई राज्य नहीं कर सकता। और बिना राज्यके सब प्रकार के अर्थों की प्राप्ति नहीं हा सकती बिना अर्थके धर्म नहीं किया जा सकता और बिना धर्म के सुख नहीं प्राप्त हो सकता, जब से जीवन के इस रहस्य को आर्य जाति भुला बैठी है तभी से सब प्रकार को दुर्गति प्राप्त हुई। जब इस सुख प्राप्ति के सूत्र को जीवन में ढाले हुए थे तब आर्य जाति स्वयं ही नहीं सुखी थी वरन् विश्व को सुखी बनाये हुए थी। इसकी छत्र छाया में केवल मानव समाज ही सुखी न था बल्कि विश्वके जीव जन्तु सब प्रकार के उपकारी जीव प्राणी स्वतन्त्रता के साथ विचरण किया करते थे। आज प्रभु की कृपासे फिर देश में स्वतन्त्रता देवी का आगमन हुआ है अब देश की बागडोर देश के कांग्रेसी कर्णधारों के हाथ में है। आज देश में अपना राज्य है। अब हमें चाणक्य के सूत्र को कार्य में परिणत करना होगा। स्मरण रहे कि सुख की भित्ति धर्म है बिना धर्म के सुख नहीं मिल सकता अतएव कोई स्टेट चाहे Secular State अथवा कोई State हो बिना धर्मके कोई स्टेट ठहर नहीं सकती। हमारे कणाद ऋषिने धर्मकी परिभाषा ही यही की है—यतोऽभ्युदय निश्रेयससिद्धिः स धर्मः। अतः आर्य्यदेश में ऋद्धि सिद्धि को धर्म धर्म का अंग माना जाता था। अर्थात् जहां स्टेट की उन्नति हो लक्ष्मी ऐश्वर्य तेज बढ़े वही धर्म है। हमें मत मतांतरों के झगड़ों को छोड़कर धर्म की इस परिभाषा को देश के सामने रखकर प्रयोग करना होगा।

हमारा अतीत काल

कोई समय था कि हमारा भारतवर्ष सब देशों में सिरमौर था। इसकी छत्र छायामें विश्वने हजारों वर्ष सुख और शान्ति की उपलब्धि की थी। मनुजी महाराज के शब्द—एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्व चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥ अर्थात् विश्व इससे सभ्यता का पाठ पढ़ा करता था। पढ़कर अपने जीवन उसी अनुसार ढाला करता था। वेदों की अमृतमयी वाणी से विश्व के प्राणी प्रभुके अमृत पुत्र बनकर कर्तव्य पालन किया करते थे और अपने को आनन्द में विभोर किया करते थे, जीव-जन्तु पशु-पक्षी बड़ी स्वच्छंदता से जीवन यापन किया करते थे। घी दूध की नदियाँ बहा करती थीं। माता पिता के सामने उनकी सन्तानों की मृत्यु नहीं हुआ करती थी। स्वास्थ्य राष्ट्र का इतना ऊंचा था कि सब प्राणी अपनी आयु पूर्ण भोगकर ही शरीर को छोड़ा करते थे। सदाचार की भावना इतनी ऊंची थी कि कोई व्यभिचारी दृष्टिगोचर नहीं होता था फिर व्यभिचारिणी कहां से हो। रामराज्य तक यह सुनहरा काल इन्हीं ऊंची भावनाओं और मानवता के पूर्ण विकास में ओतप्रोत रहा।

Maxmullar ने भारतके प्राचीन साहित्य को देखकर कहा था—If I were to look over the whole world to find out the country most richly endowed with all the wealth. power, and beauty that nature can bestow, in some parts a very para-

dise on earth—I should point to India. If I were asked under what sky the human mind has most fully developed some of its choicest gifts, has most deeply pondered on the greatest problems of life, and has found solutions of some of them which will deserve the attention even of those who have studied Plato and Kant—I should point to India. And if I were to ask myself from what literature we here in Europe —we who have been nurtured almost exclusively on the thoughts of the Greeks and the Romans, and of the Semetic race, the Jewish—may draw that corrective which is most wanted in order to make our inner life more perfect, more comprehensive, more universal, in fact, more truly human, a life, not for this only, but a transfigured and eternal life, again I should point to India.'—Professor Max Mullar's India What can it teach us ? P. 8.

Heeren' Historical Rese arches, में लिखा है—"India is the source from which not only the rest of Asia but the whole Western

World derived their knowlegde and their religion,"—Professor Heeren's Historical Researches, Vo 11, p. 45.

अर्थ—यदि यथासाध्य प्रकृतिप्रदत्त समस्त सम्पत्ति, शक्ति एवं सौन्दर्य से युक्त विश्व में किसी देश का चुनाव करना पड़े तो मैं कहूंगा कि वह पृथ्वी लोकपर स्वर्ग भारतवर्ष है। यदि मुझसे पूछा जाय कि किस गगनमण्डलके आभ्यांतर अभीष्ट विभूतियोंके साथ विकसित मानव मस्तिष्क ने जीवन की महत्वपूर्ण समस्याओं को दत्तचित से विवेचन किया है और उनमें से अधिकांश को सुलझाया भी है जिनको सुलझाने के लिये काण्ट और प्लेटो के अध्ययन करने वालों का भी ध्यान आकृष्ट हुआ तो मैं भारतवर्षका निर्देश करूंगा। और यदि मुझसे स्वयं पूछा जाय कि हम लोग यूरोप में किस साहित्य से यूनानी तथा रोमनों के विचारोंपर साधारणत: शिक्षित हुए हैं ओर शेमोत्पन्न जाति यहूदी उन समुचित विचारों को ले सकते हैं, जिनकी आवश्यकता आन्तरिक जीवन को अधिकतर उचित विवेचन पूर्ण सार्वभौम वास्तविक मानवता से सुसज्जित, एक जीवन केवल इसी के लिये नहीं बल्कि रूपांतरित एवं अनन्त जीवन के लिये है तो पुन: मैं भारतवर्ष का निर्देश करूंगा। प्रो० मैक्समूलर, "भारत हमें क्या शिक्षा दे सकता है" से उद्धृत।

भारतवर्ष ज्ञान का स्रोत जिससे केवल अवशिष्ट एशिया ही नहीं बल्कि समस्त पाश्चात्य विश्व ने ज्ञान तथा धर्मकी शिक्षा ली है। प्रो० हीरेनके ऐतिहासिक अनुसंधान से उद्धृत।

लेकिन स्वामी जी सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों को राज्य करने की तो कथा ही क्या कहिये आर्यावर्त में भी आर्यों का अखण्ड स्वतन्त्र स्वाधीन निर्भय राज्य इस समय नहीं है।

यह बात आज भी ठीक है, हम आज स्वतन्त्र अवश्य हुए हैं लेकिन देश को खण्डित कर ही हुए हैं। हमारी राजनीति धर्म-नीतिपर निर्भर थी, जो भी इसके प्रभाव में आता था भारत का हो जाता था। चीन, जापान, जावा, सुमात्रा, मिस्र यानी विश्वपर हमारी संस्कृतिकी छाप लगी थी। संस्कृत भाषा विश्व की जननी बनकर सारे संसार को संस्कृत कर रही थी। लिखने का तात्पर्य है कि विश्व में हमारा चक्रवर्ती राज्य था। धार्मिक विजय की पताका फहरा रही थी। हमारे ऋषि मुनियोंने अपनी तपस्या और साधना से विश्व में मिठास भर दी थी, वेदकी ऋचाओं द्वारा विश्वको, आकाश एवं सूर्य चन्द्र सिन्धु आदि को मिठास दे रहे थे। लेकिन गत युद्धके दावानल से देखा सभी स्थानों में बारूद ही बारूद प्राप्त होता रहा है। आकाश भी आग बरसाते थे, पृथ्वी भी बारुद से जल रही थी। समुद्र भी आग फेंकता था। सारे विश्वका वातावरण विषैला कर रखा था और हमारे ऋषि मुनि विश्वकी यज्ञ हवन की सुगन्धि से सुगन्धित किया करते थे। किन्तु विदेशियों से ऐसा पदाक्रांत हुए कि क्या हमारी समाजनीति और क्या धर्मनीति राष्ट्र को छोड़कर चलती

गई जिसका यह परिणाम हुआ कि विश्वपर राज्य तो क्या करना अपने भाइयों-भाइयों में झगड़े आरम्भ हो गये और अपने स्वर्ग को संसारने अपने हाथों झुलसा दिया। धर्मकी दुहाई देकर अधर्म के गहरे गर्तमें देश और विश्वको फेंक दिया, पाश्चात्य सभ्यता का दौर-दौरा विश्वमें जोरोंपर हो गया। धोखेबाजी, जुआचोरी बनावटी जीवन को लोग अपनाने लगे, राजनीतिका अर्थ ही दूसरे की आंखों में छलसे धूल डालकर उसके मालको हड़प करना (Diplomacy) हो गया। विषय वासना की भट्ठी इतनी गरम हुई कि जगह २ नारी जातिपर बलात्कार करना, नंगा नाच, मारकाट, खूनरेजी, मूक जानवरों का कत्ले आम जारी हो गया। पाश्चात्य सभ्यता की छत्रछाया से मानवता भाग निकली उसकी जगह बर्बरता, रक्त शोषण, एक दूसरे को हड़प करने का बाजार गरम हो। पवित्र विश्वका मानचित्र ही बदल गया। चार आश्रम जिसपर विश्वकी नीति निर्भर थी, जिससे मानव समाज पूर्ण विकास का लाभ करता समय-समय पर वर्षा होती थी, समय-समय पर खेती और समय-समय वृक्ष पल्लवित हुआ करते थे। प्रकृति के सिद्धांतों के साथ विश्व फला फूला करता था, इस प्रकारके आश्रम की व्यवस्था खार खार हो गई। चारों आश्रम की कचूमर निकल गई केवल एक आश्रम ही रह गया वह विलासिता का आश्रम विषय वासना की भट्टीमें मानव समाज के जलकर राख हो जाने का आश्रम, पैदा होते ही भोगका आश्रम आरम्भ हो गया।

"हसरत उन गुलों पर जो बिन खिले कुमला गये"। ऐसा मानव समाज हो गया। आज यदि हम चाहते हैं कि विश्वका मानव समाज फिर सुखी हो भारतवर्ष फिर जगतका गुरु बन कर फिर एकबार विश्व को पाठ पढ़ाये तो देश की आर्य संस्कृति मानवता के विकास की सबसे ऊंची शिखर है उसीका सहारा लेना होगा वेदोंकी अमृतमयी वाणी से विश्वको मत मतांतरों से रहित कर एक मानवता का पुजारी करना होगा। आज यह कार्य आर्य समाज के सामने है, यही आर्य समाज के प्रवर्तक चाहते थे। आज देश स्वाधीन हुआ है इसीके साथ-साथ वेदों का प्रचार भी बढ़ना चाहिये ताकि देश की स्वाधीनता इसके बसूलोंपर निर्भर होकर सही अर्थों में आज़ादी का रूप रख सके, ऐसा न हो कि स्वाधीनता गुनाह करने के लिये पट्टा समझ लिया जाय। इसी लिये देश और विश्व का कल्याण इसीमें है। आज इस सम्मेलनपर कुछ खास निश्चय कर ही प्रगति के साथ देशमें कूदना होगा ताकि देश आर्यावर्त बन सके। राम राज्य का दृश्य फिर एकबार नसीब हो सके, और विश्व को "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का सन्देश पहुंचाकर सुखी कर सकें धर्मनीतिका राजनीतिके सिद्धांतों पर आरूढ़ होकर प्रसार करना होगा जैसा शांतिपर्व महाभारत में कहा है—

मज्जेत्त्रयी दण्डनीतौ हतायां सर्वे धर्माः प्रक्षयेयुर्विबुद्धाः।
सर्वे धर्माश्चाश्रमाणां हताः स्युः क्षात्रे त्यक्ते राजधर्मे पुराणे॥
सर्वे त्यागा राजधर्मेषु दृष्टाः सर्वाः दीक्षा राजधर्मेषु युक्ताः।
सर्वा विद्या राजधर्मेषु चोक्ताः सर्वे लोका राजधर्मे प्रविष्टाः॥

म० भा० शा० ६३, २८, २९

अर्थः—राजाओं के दण्डनीति रहित होनेपर चलानेवाले से हीन नौका की भांति तीनों डूबते हैं, इससे सब धर्मही नष्ट हो जाते हैं। प्राचीन क्षत्रिय धर्म को त्यागने पर सब आश्रम धर्म भी नष्ट हो जाते हैं। राजधर्ममें ही सब भांति का दान दीख पड़ता है, दीक्षा की सब रीति राजधर्म में ही कही गई है, सब विद्या राजधर्म युसे क्त और सब लोग ही राजधर्म में प्रविष्ट है।

आर्य सभ्यता

आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराजने एक देशमें आवाज उठाई थी। वह थी "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" अर्थात् विश्वको आर्य बनाओ। बहुत लोग समझ लेते हैं इसका अभिप्राय है कि सारे विश्व को आर्य समाजी बनाओ इसका हरगिज यह अर्थ नहीं है, इसका अभिप्राय है कि विश्वको आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाओ, विश्वका इतिहास अवलोकन करने से पता चलता है कि विश्व की सब सभ्यताओं से श्रेष्ठतम यदि कोई सभ्यता है तो आर्य सभ्यता है जब यह संसार आर्य सभ्यता को अपनाये हुए था तब विश्व सुख और शांतिका निकेतन बना हुआ था जबसे आर्य सभ्यता का ह्रास आरम्भ हुआ तब से विश्वके दुःखों की कहानी बढ़ने लगी। जाति विद्वेष की अग्नि प्रज्वलित हो उठी। हमारे अपने देश में वैदिक सभ्यता के ह्रास होने से देश पराधीन हो गया जितने भी विदेशी शासक देश में आये सभीने अपनी रीति रिवाज सभ्यता का प्रश्रय देना आरम्भ किया। भगवान कृष्णके गीताके वसूलोंके अनुसार 'यदा यदाहि

धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।" जब-जब धर्म का लोप होने लगा अधर्म बढ़ने लगा, प्रभु की ओर से एक न एक शक्ति आती रही जो पापों का ध्वंस करती रही और आर्य सभ्यता की रक्षा होती रही। यही कारण है कि विश्व की सारी जातियों के चिह्न तक न रहे; लेकिन सदियों की गुलामी के होते हुए भी आर्य सभ्यता न मिट सकी। आज भी विश्व के हृदय पर भारतीयता की छाप लगी हुई है; विश्व के अनेक आचार्य इस तथ्य को स्वीकार कर चुके हैं। सिकन्दर आया आर्य सभ्यता का हृदय पर छाप लेकर वापस लौट गया बौद्ध कालीन जो-जो शासक आये अन्तमें आर्य सभ्यता में परिणत होकर विलीन हो गये। मुगलों का दौर दौरा देशमें सैकड़ों वर्ष तक रहा। महमूद गजनी देश पर १७ बार आक्रमण कर लूट २ कर माल लेकर लौटता रहा। अन्त में मृत्यु के समय उसके किये हुए कुकर्मों का चिट्ठा सामने आया। मरते समय दोनों हाथ खाली अर्थी पर से दिखा कर चलता बना।

सम्राट अकबर जब तख्त पर बैठा तो आर्यों की महत्ता का कायल हो गया। दीन इलाही एक नवीन धर्मको प्रतिष्ठित किया रामायण, महाभारत का फारसी में अनुवाद होना आरम्भ हो गया। आर्यों के धर्म का आदर करता रहा। इसी लिये सबसे अधिक देर तक राज्य कर गया। दीन इलाही एक मानवता को पुनः प्रतिष्ठित करने का प्रयास था लेकिन औरङ्गजेब ने आकर सब किये पर पानी फेर दिया, मुस्लिम स्टेट के स्वप्न देखता रहा

जबरदस्ती जनता को मुसलमान बनाना चाहा और आर्य सभ्यता को कुचलने का बार-बार यत्न किया। लेकिन अन्त में श्रीगुरु गोविंद और वीर शिवाजी महाराज का आगमन हुआ। उन्होंने अत्याचारी मुगल साम्राज्य की जड़ उखाड़ कर फेंक दी। अंग्रेज देश में आये, बृटिश सरकार की चकाचौंध करनेवाली सभ्यता आई, भाषा, वेष-भूषा आई। बाइबल लेकर पादरी आये। शिक्षा का माध्यम आंग्ल भाषा रखा। आर्य संस्कृति पर जबर्दस्त आघात लगा। ऋषि दयानन्द आये। देश की पाश्चात्य सभ्यता की ओर बहती हुई धाराको प्रबल शक्ति से रोकने का प्रयास किया। सिंह गर्जना से भारत की सुषुप्त भावनाओं को जाग्रत कर Back to the Vedas अर्थात् वेदों की ओर चलो का आदेश किया। लार्ड मेकाले ने जो Eastern Bottle में Western wine भरने का Process जारी कर रखा था। धड़ाधड़ जो बोतलें भरी जा रही थी ऋषिकी आवाज से भरने में घबड़ाहट आने लगी। जनता जगी, जाग कर आर्य सभ्यता, आर्य भाषा का सहारा लेकर अपनी बिगड़ी को बनाने लगी। स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द आये शुद्धिका नाद बजाया। धर्म परित्याग करने से जनता सचेत हो गयी।

नारी अपहरण को रोकने का प्रबल यत्न करने लगी। पश्चात्य शिक्षा से बचने के लिये देशमें गुरुकुल आर्य पद्धतिपर खुलने लगे भूली हुई संस्कृत भाषा फिर याद आने लगी, कांग्रेस को उस समय भी एक वर्ग को प्रसन्न करने की नीतिमें अधिक लगी हुई

देखकर स्वामीजी कांग्रेस से अलग हो गये। शुद्धि का नाद बजाया आर्य सभ्यता की रक्षा की। महात्मा गान्धी जी आये सत्य अहिंसा अस्त्रसे विदेशियों की गुलामी से मुक्तकर गये, पाश्चात्य सभ्यता से देश को छुटकारा दिला गये, विदेशी भाषा से देशका पल्ला छुड़ाकर भारतीयता की ओर ले गये। अंग्रेजों के विरुद्ध Quit India का आन्दोलन चला जिससे अङ्गरेजों को देश खाली करना पड़ गया। उसी के साथ जो आये थे, वह भी साथ वपिस जाने लग पड़े, अब कांग्रेस सरकार का शासन है। अपने देश वासी गुलामी से मुक्त हुए हैं, आज राष्ट्र के पुनः निर्माण का कार्य बड़ी तीव्र गतिसे राष्ट्रीय सरकार ने जारी कर दिया है, लेकिन राष्ट्रीय सरकार में कुछ ऐसे सज्जन भी हैं जो आर्य सभ्यता के विरोधी प्रतीत होते हैं। आर्य सभ्यता को तोड़ मरोड़कर एक खिचड़ी सी पकाना चाहते हैं। उनसे मेरा यही कहना है देश चाहता है कि देशने जो स्वतन्त्रता लाभ की है वह हजारों वर्षों तक सुरक्षित रह सके बराबर विदेशियों द्वारा पादाक्रांत न हो, देश में अपना धन रहे, तो यह आवश्यक है कि राष्ट्रीय सरकार को जनमत के साथ चलना होगा। आर्य संस्कृति जो मानवता की, सब से ऊंची शिखर है, उसीका सहारा ले अपनी Secular state के नागरिक को तैयार करना चाहिये ताकि Secular state के बनने में शीघ्र प्रगति मिल सके। आर्य सभ्यता मानवता के विकास के सिद्धांतोंपर निर्भर है जिससे मनुष्य सही अर्थों में मनुष्यत्व लाभ कर सकता है। याद रहे

अगर जबर्दस्ती देशपर कोई अनार्य कारनामे थोपे जायेंगे तो शासन में सुख शांति की प्राप्ति बड़ी दुर्लभ रहेगी जैसा कि लेखक ग्रैहम हौचिसन अपनी पुस्तक Arya the Call of the Future के पृष्ठ ३८ पर लिखते हैं कि :—

Disloyalty to the Aryan principles of conduct and to Aryan national ideas, which is not an uncommon trait in the character of both British and Indian politicians and publicists renders a great disservice to the world. No constitution for India can hope for success which fails to recognize this unassailable Truth. To accentuate differences, possessed of no inherent value or reason, must be only to increase the difficulty of solution and to make impracticable the welding of divergent ideas to the service of the whole. To depart from the one Truth which alone gives unity will be to destroy all that more than six thousand years of human progress has contributed. This is a matter of education, almost of education alone.

आगे चलकर भारत के शासकों के सम्बन्ध में उसी पुस्तकके पृष्ठ ६७ पर लिखते हैं कि :—

The time has come when the administrators of India shall clearly understand that in the wake of the disloyalty to the Aryan principle will come revolution and anarchy, that if they will gird themselves anew with the knowledge and teachings of the great philosophies upon which the highest civilization of mankind is founded, then they will be truly endowed with the gifts of leadership.

पुनः आर्यों के दार्शनिक विचारों पर विचार करते हुए पृष्ठ ७२ पर लिखते हैं :—

Scientific invention. the marvels of speedy transport and communication, have charged the outward and visible signs of the nations of the Aryan era. The ancient philosophies which under Aryan rule dominated all material considerations are as valuable to day in the governance of human organization and as expressing the happiness of mankind as they were in the epic age of the Aryan rulers.

अन्तमें उन्होंने आर्यों के आदर्शों पर विवेकपूर्ण अपनी भावनाएं प्रकट करते हुए पृष्ठ ६३ पर लिखा है कि :—

The Aryan ideal is the focus, for the All Indian ideal. The Aryan ideal is the only basis of the All India concept. Here wherein all races sects, clans, tribes, castes, colours, acquire immediate equality, is the only ideal which contributed to the British race any possibility, or indeed any right, by which to contribute towards the solution of the Indian problem. The Aryan ideal is the solution. The Aryan ideal is the one unifying force. Once this essential idea is grasped, all else with follow.

अतएव भारत के प्राचीन कालके इतिहास की घटनाओं को सामने रखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि शासन का विधान आर्य सभ्यता के सामने रखकर तैयार करना चाहिये ताकि ईश्वर की सबसे बड़ी देन विश्वसुख की उपलब्धि कर सके। और देश में सही अर्थों में रामराज्य की प्राप्ति से देश-वासी अपने सुनहरे कालका सुख अनुभव कर सके, परमात्मा करे कि देश में आर्य बनकर विश्व में चक्रवर्ती राज्य स्थापना कर सके।

अन्तमें परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह देश को इस प्रकार की शक्ति प्रदान करे जिससे हमारे परम पवित्र ऋषि मुनि, यतियों की शुभ कामनायें पूरी हों और—

मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः संत्वोषधीः ॥
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवंतु नः ॥

ऋ. १।९०।६,७,८ ॥

अर्थ—सत्यचारी पुरुष के लिये वायु मधुवर्षण करते हैं। नदियां मधुरक्षण करतीं। हमारे लिये औषधियां माधुर्ययुक्त होवें।

हमारे लिये रात्रि मधु हो और उषा भी। पार्थिव लोक मधुमान् हो। पिता द्यु लोक मधु हो।

वनस्पति मधुमान् हों, सूर्य मधुमान् हो और गायें मधुरता-युक्त दुग्धवती हों। इत्यादि वेद मन्त्रों को चरितार्थ करने में देश सफल हो सके।

अन्तमें मैं दर्शकों, प्रतिनिधियों तथा अन्य आगत महोदयों से क्षमा प्रार्थी हूं जो कड़े शीत और यातायात के कष्टों की परवाह न करते हुए इस महासम्मेलन में पधारे हैं।

ओ३म् शान्तिः। शान्तिः!! शान्तिः!!!

॥ ॐ ॥

तलपट आर्य सम्मेलन

३४६६४।।।=) आमदनी

१४५६) ६६५१) स्वागत समिति फीस

१३४६)+ ५२६) प्रतिनिधि

२५४१०।।।=) दान खाते

२४०४) दर्शक ख;ते

३४६६४।।।=)

११०) विषय निर्धारिणीकी टीकट

३६४५३।।।=)

१५३५।)। रकम देनी

१२५ग।) रखारामजी

३३) आर्य्य समाज कलकत्ता

१३८।-)।। किशनलालजी पोद्दार

३६२६६।।)।।। खर्च

२३०२।।=)। उपदेशक खर्चा

१६३।।=)।।+ ७५७=) डाक व्यय

१४७)।।। स्टेशनरी

८५०।≡)।।+१२५०।≡)।।। मार्ग व्यय

३०२)+ २६७५-)। छपाई

१०५०=)।। फुटकर खर्चा

१७४७≡) वेतन

५६६-) प्रचार

७५०८=)।।। पण्डाल

३६५४।।≡) आर्य्यवीरदल

१४५८।।-)।। बिजली खर्चा

८१०।≡) नगर कीर्तन
६८२५≡) भोजन खर्च
१८५४।≡) यज्ञ
३२५) लाउडस्पीकर

३६२६६।।)।।।
१३४६=)

३७६१२।।≡)।।।
२६३।।–)।। यूनाइटेड कमर्शीयल बैंक के नाम

३६५३०=)।
१३४६=)

३७८७६।)।
११२।।।=) सार्वदेशिक सभाके नाम

३७६८६=)।

६१।=)।।। उचन्त

१५३५।)।

३६५३०=)।
१४५६)

३७६८६=)।

आय-व्यय

३६४५३।।।=) आमदनी	३७६६१।।=)।। ख़र्च
११५८।।।)।।। घाटा	
३७६६१।।=)।।	

तलपट

१५३५।)। देना	११५८।।।)।। घाटा
	३७५।≡) लेना
	२६३।।-)।। बैंक
	११२।।=) सार्वदेशिक
	१५३५।)।

षष्ठ आर्य्य महासम्मेलन (कलकत्ता)

दानियों की सूची ।

२५००) श्रीमान् दीवान बहादुर बलीरामजी तनेजा झारिया
२१००) श्रीमान् शम्भूरामजी करोडी (दान यज्ञमें)
११००) श्री जुगल किशोरजी बिड़ला
११००) सेठ श्रीकृष्ण लालजी पोद्दार
१०००) जायसवाल संघ
५०१) इम्पीरियल बैंक पर ह: हण्डाजो
५०१) श्रीमान् रखा रामजी गम्भीर
५००) ,, चिरञ्जीवलाल नाहरी
५००) ,, आनन्दराम गजाधर
५००) ,, सुन्दरलालजी लुगानी
५००) ,, हंसराजजी हाण्डा
५००) ,, सेठ मनसुखरायजी मोर
५००) ,, हरवंश लालजी मलहोत्रा
२५१) ,, प्रताप सिंहजी
२५१) ,, रामनारायणजी
२५१) ,, जे० आर० मल्लिक
२५१) ,, लाला सागर चन्द्र वड़रा

२५०) श्रीमान् रतनलाल गोयनका
२५०) „ भागीरथीजी मोहता
२५०) „ ठाकुरदास रखाजी
२५०) „ रामेश्वरजी अग्रवाल
२५०) „ बाबूलालजी राजगड़िया
२५०) „ सरदार तारा सिंह
२५०) „ सभापति रायजी
२५०) „ जगन्नाथजी गुप्त
२५०) „ कर्मचंदजी थापर
२५०) „ सन्त तुलसी दास जीवराज
२५०) „ केसरदेवजी कानोडिया
२५०) श्रीमती रामकुमारी भुवालका
२५०) श्रीमान् रघुनाथ एण्ड सन्स
२५०) „ शान्ति स्वरूपजी गुप्त
२०१) „ बिलास रायजी
२००) „ दीपचंदजी कृष्णलालजी
१५१) „ एम० एल० अग्रवाल
१५१) „ आर्य समाज, धनबाद
१५१) श्रीमती जसवन्त कौर
१५०) श्रीमान् प्रेमपालजी मेहरा
१२५) „ बलदेवराज मलहोत्रा
१०१) „ ब्रह्मदत्तजी गुप्त

१०१) श्रीमान् फागु सिंहजी
१०१) „ रामस्वरूप नामचन्द्र
१०१) „ धर्मचन्दजी
१०१) „ देवध्वजजी
१०१) „ ला० लाजपत रायजी
१०१) श्रीमती धीमानजी
१०१) श्रीमान् हरीन्द्र सिंहजी
१०१) „ वेद मेहता
१०१) „ श्रीसाईजी
१०१) श्रीमती सुशीला देवी जी
१०१) श्रीमान् नन्दलाल जी पुरी
१०१) „ लक्ष्मीनारायण चोपड़ा
१०१) „ भगवानदासजी अग्रवाल
१०१) „ अरोड़ा ए० सहगल
१०१) „ बिहारीलाल एण्ड सन्स
१०१) „ सिकरी एण्ड सन्स
१११) „ भगवानदासजी
१११) श्रीमती सिद्धेश्वरी देवी जी
१०१) श्रीमान् प्रमोद रामजी
१०१) „ रामप्रतापजी काईंया
१०१) „ पदमचन्दजी
१०१) „ भीमसेनजी

१०१) श्रीमान् के० सी० बकसी
१०१) „ मुरलीधर केजरीवाल
१०१) „ श्रीरामजी खट्टर (दान यज्ञमें)
१०१) „ उमरावचन्द्र खैरुका
१०१) „ रुलियारामजी गुप्त
१०१) „ गोविन्द प्रसादजी पोद्दार
१००) „ सौदागर मलजी
१००) „ ला० भगतरामजी पचरीया
१००) „ हरिदत्तजी बर्मन्
१००) „ मूलचन्दजी अग्रवाल
५१) „ भूरामलजी
५१) „ गोपीनाथजी गुप्त
५१) „ द्वारका प्रसाद गुप्त
५१) „ नाथुरामजी पोद्दार
५१) „ राधाराम सोहनलाल
५१) „ कर्तार कं० लिमिटेड
५१) „ रघुनन्दन लालजी
५१) „ रामतीर्थजी भारद्वाज
५१) „ बी० एल० सभरवाल
५१) „ शान्ति स्टोस
५१) „ दीनानाथजी
५१) „ रामचन्द्रजी सम्मानी

५१) श्रीमान् सीतारामजी

६५) „ बलदेव प्रसादजी आर्य्य

५१) „ ए० एल० जी चौपड़ा

५१) श्रीमती चन्द्रमुखीजी जैदका

५१) श्रीमान् पी० सी० चावला डायना स्टोर्स

५१) श्रीमान् कृष्णलालजी खट्टर

५१) „ लक्ष्मीनारायण सदानन्द गुप्त

५१) „ दुतिचाँदजी रकेलिया

५०) „ गोपालदासजी सिकारी

५०) „ पं० अवध विहारी लालजी

—*०*—

मुद्रक :—
रुलियाराम गुप्त
दि बंगाल प्रिण्टिंग वर्क्स
१, सिनागाग स्ट्रीट, कलकत्ता।